कीमत - १५ रुपये

युगीन काव्य

काव्य बोध की त्रैमासिकी

वर्ष : ८, अंक : २९, जुलाई-सितंबर २०१३

मुंबई के दिवंगत कवियों पर विशेष

गीत

-सरस्वती कुमार दीपक

राज भी लुट गये ताज भी छिन गये
आज भी प्रीत की रागिनी है वही
आज भी चांद की चांदनी है वही
आज भी सरहदों पर अमन है फ़ना
आज भी आदमी जानवर है बना
आज भी जग का है रंग वैसा ठना
ज़िंदगी मौत का हो रहा सामना
इस महल पर गिरी, इस कुटी पर गिरी
आज भी बेरहम दामिनी है वही
है उजाला मगर, है अंधेरा है बड़ा
है सवेरा कहीं पर रहा लड़खड़ा
आज सौदा मुहब्बत का होने लगा
आज दिल हो गया संग से भी बड़ा
है ज़हर भी ज़हर, दूध भी है ज़हर
आज भी नाग की, नागिनी है वही
काँपती है ज़मीं, रो रहा आसमां
खो गई है शराफत न जाने कहां
मुंसिफों की जमायत कहीं सो रही
हो रहे हैं सितम हर कदम पर यहां
आज भी लूट है, आज भी फूट है
बोतलें हैं वही कामिनी है वही

RNI. MAH/HIN/2006/18827

६०

युगीन काव्या (त्रैमासिक)

वर्ष: ८, संयुक्तांक: २९-३०, जुलाई-दिसम्बर २०१३

परामर्श
डॉ. नंदलाल पाठक
अशोक बिंदल

संपादक
हस्तीमल 'हस्ती'

संपादकीय सहयोग
हूबनाथ
कविता गुप्ता
राधारमण त्रिपाठी
जे. पी. बघेल/अमित मिश्रा

संपादकीय कार्यालय :
२८, कालिका निवास, नेहरू रोड,
पोस्ट ऑफिस के सामने, सांताक्रुज (पूर्व),
मुंबई - ४०० ०५५
फोन : २६१२ २८६६

सहयोग राशि :
द्विवार्षिक : सौ रुपये (केवल मनीऑर्डर द्वारा)
संस्था के लिए - १५० रुपए
(चेक ५० रुपए जोड़ कर भेजें)
(आजीवन सदस्यता - रु. १०००)

मुद्रक :
प्रिंट भारत, ९/ए, चिंतामणि अपार्टमेंट,
आर.एन.पी. पार्क,
काशीविश्वनाथ मंदिर के सामने,
भायंदर (पूर्व), मुंबई - ४०१ १०५

(संपादन-संचालन एवं प्रबंधन अवैतनिक एवं अव्यावसायिक)

सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्ताँ हमारा

सौजन्य

साहित्य–संगीत–कला को समर्पित

शब्दम्

श्रीमती किरण बजाज

(संस्थापक अध्यक्ष)

जुलाई - दिसम्बर २०१३ / युगीन काव्या / ०२

आभार

राधेश्याम उपाध्याय

मधुकर गौड़

शीतला प्रसाद निराला

नरहरि अमरोहवी

कैलाश गुप्ता

मुरलीधर पाण्डेय

हृदयेश मयंक

राकेश शर्मा

अक्षय जैन

प्रीतम सिंह त्यागी

इस बार

- हमारी ओर से...
- सम्पादकीय

  मुंबई में काव्य-गोष्ठियों की परंपरा
- हृदयेश मयंक
- अनजान
- अंगद सिंह बिसेन
- अक्षयबर नाथ दुबे
- अनन्तकुमार पाषाण
- इन्दीवर
- कपिल कुमार
- कमल शुक्ल
- किशोरीरमण टण्डन
- कुन्तल कुमार जैन
- कुमार शैलेंद्र
- चद्रसेन 'क़मर'
- चंदनमल चाँद
- जीवितराम सेतपाल
- दाऊदत्त उपाध्याय
- पं. नरेद्र शर्मा
- नीरज कुमार
- नीरव
- नीलकण्ठ तिवारी
- पं. प्रदीप
- पुरुषोत्तम दुबे
- डॉ. बंशीधर पंडा
- श्रीमती बिजलीरानी चौधरी

- बृजेंद्र गौड़
- ब्रजेश पाठक 'मौन'
- भगवतलाल 'उत्पल'
- पं. भरत व्यास
- मधुप शर्मा
- मरयम ग़ज़ाला
- महीपाल
- महेंद्र कार्तिकेय
- मालिनी बिसेन
- मुरारीप्रसाद 'मधुप'
- मोतीलाल मिश्र
- मोहनलाल गुप्ता
- रमेश दुबे 'नादान'
- डॉ. रविनाथ सिंह
- रामचंद्र पाण्डे श्रमिक
- राजीव सारस्वत
- रामपदारथ पाण्डेय
- डॉ. राममनोहर त्रिपाठी
- रामरिख 'मनहर'
- रामसागर पाण्डे
- रामावतार चेतन
- लालमणि शुक्ल 'आलोक'
- लोचन सक्सेना
- पं. वसंत देव
- विजयवीर त्यागी
- डॉ. विनय
- डॉ. विनोद गोदरे
- वीरेंद्रकुमार जैन
- वीरेंद्र मिश्र
- शिवशंकर वशिष्ठ
- शैल चतुर्वेदी
- शैलेंद्र
- श्याम 'ज्यालामुखी'
- संतबख्श सिंह 'चंचल'
- सच्चिदानंद सिंह 'समीर'
- सत्यप्रकाश जोशी
- सरस्वतीकुमार 'दीपक'
- डॉ. सी. एल. प्रभात
- सुमन सरीन
- सोहन शर्मा
- श्रीनाथ द्विवेदी
- श्रीनिधि द्विवेदी
- श्रीहरि
- हेमंत
- पुस्तकें मिलीं
- नये संग्रह

हमारी ओर से...

विगत दो दशकों से काव्या परिवार पूरी मेहनत, लगन और ईमानदारी से युगीन काव्या को अपने पाठकों तक पहुँचाता रहा है। सिर्फ़ कविता को समर्पित हिंदी की यह छोटी-सी पत्रिका अपने साहित्यिक और सांस्कृतिक दायित्वों को बखूबी निभाती रही। सीमित साधनों-संसाधनों के चलते इस त्रैमासिकी में कुछ कमियाँ और कमज़ोरियाँ भी रही हैं जिन्हें अपने सुधी पाठकों के निर्देश पर हम समय-समय पर सुधारते और सँवारते भी रहे। सन १९९६ के मध्य में युगीन काव्या परिवार एक संकट के दौर से गुज़रा और इस पत्रिका का प्रकाशन कुछ अंकों तक स्थगित करना पड़ा। उसके बाद नए साथियों के सहयोग से 'युगीन काव्या' ने जो रफ़्तार पकड़ी तो उसका क्रम कभी भंग नहीं हुआ। विशेषांकों की कड़ी में हमने अपने पाठकों को 'दोहा विशेषांक' की भेंट और 'प्रेम विशेषांक' के रूप में प्रेम की सौगात भी दी।

युगीन काव्या का साठवाँ अंक एक विशेषांक के रूप में अपने पाठकों तक पहुँचा रहे हैं। लघु पत्रिकाओं के संदर्भ में एक बात कहनी है। लघु पत्रिकाओं के योगदान को स्वीकारते हुए भी हिंदी भाषा जन समुदाय कुछ विशेष गंभीर नहीं दिखाई देता है। विभिन्न कारणों से पत्रिकाएँ जनमती हैं और अपने उद्देश्य पूर्ति के बाद या कभी-कभी पहले ही काल के गर्त में समा जाती हैं। लघु पत्रिकाएँ ही नहीं 'धर्मयुग', 'सारिका' और 'साप्ताहिक हिंदुस्तान' जैसी बेहद लोकप्रिय और विशाल प्रतिष्ठानों द्वारा पोषित पत्रिकाएँ भी आज इतिहास बन गई हैं। शायद उन प्रतिष्ठानों की कुछ मजबूरियाँ रही होंगी पर जो पत्रिकाएँ सिर्फ अपने साहित्यिक दायित्व को निभाने के प्रति ही समर्पित होती हैं वे भी परिस्थितियों का शिकार होकर नेपथ्य में चली जाती हैं। कारण जो भी कुछ रहे हों अक्सर लघु पत्रिकाओं की यही नियति रही है। इन दिनों हम भी इसी नियति का शिकार हो रहे हैं। खेद के साथ बताना चाहते हैं कि इस विशेषांक के बाद हम थोड़ा अवकाश ले रहे हैं।

अवकाश से पहले हमने सोचा कि जिस मुंबई में युगीन काव्या ने लगभग २० वर्ष गुज़ारे मुंबई के उन रचनाकारों के प्रति भी, जो आज हमारे बीच नहीं हैं और फ़ितरतन हम उन्हें भुला भी चुके हैं, उन्हें याद करते चलें। जो अपने अतीत को भूल जाता है उसका कोई भविष्य नहीं होता। आज़ादी से पहले ही इस मुंबई शहर में हिंदी कवियों और काव्य -गोष्ठियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज करानी शुरू कर दी थी। उर्दू मुशायरों और कव्वालियों के साथ हिंदी कविताएँ भी लोगों तक पहुँचने का प्रयास

कर रही थीं पर जो शोहरत कव्वालियों और मुशायरों को मिली वह हिंदी को नसीब नहीं हुई। महाविद्यालयों में कवियों को बुलाकर उनकी रचनाएँ सुनने का चलन शुरू हो चुका था पर मुंबई में आज़ादी से पहले कोई इतनी बड़ी संस्था नहीं थी जो हिंदी कविताओं को प्रश्रय दे। हालाँकि राजस्थान के मारवाड़ी उद्यमी हिंदी माध्यम की पाठशालाओं के जरिये हिंदी अध्ययन-अध्यापन की शुरुआत कर चुके थे। सेठ आनंदीलाल पोद्दार, सीताराम पोद्दार, रामनारायण रुइया, बृजमोहनलाल रुइया, रामनारायण पोद्दार जैसी विभूतियों ने शिक्षा के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान किया। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के ऐसे ही एक व्यापारी थे जो करते पहलवानी थे और दक्षिण मुंबई में ज़वेरी बाज़ार की जूना सट्टा गली में चाय की एक दुकान चलाते थे। नाम था बनवारी लाल गुप्ता। गुप्ता जी साहित्यकार तो नहीं थे पर कविता के प्रति उनके मन में एक विशेष आदर का भाव था। इस आदर के जन्मदाता कवि नीरव थे। कर्मकांडी पंडित नीरव कवि थे। बनवारी लाल गुप्ता की संतानें जीवित नहीं रह पाती थीं। अंधश्रद्धा कहिए या आस्था गुप्ताजी ने अपने नवजात शिशु को हरिद्वार में गंगाजी में खड़े होकर नीरव जी को दे दिया और नीरव जी ने वह बेटा बनवारीलाल जी को लौटाते हुए बेटे के बदले में एक वचन लिया कि गुप्ताजी आजीवन काव्य गोष्ठी आयोजित करवाएँगे। सन् ५० के आसपास उस समय की जूना सट्टा गली में स्थित गुप्ताजी की चाय की दुकान प्रत्येक शनिवार को आधे दिन के बाद बंद हो जाती और वहाँ काव्य गोष्ठियाँ जमा करतीं। मशहूर गीतकार शैलेंद्र, इंदीवर, आनंद बक्शी, सत्येन कप्पू जैसी हस्तियों ने इन काव्य गोष्ठियों में हिस्सा लिया। नीरव जी के निधन के पश्चात इस गली का नाम नीरव गली पड़ा और यह गली आज भी नीरव गली के नाम से जानी जाती है। भले ही ज़्यादातर लोग यह न जानते हों कि यह नीरव आख़िर है कौन?

आगे चलकर गुप्ताजी ने व्यापार में उन्नति की। उनका परिवार विलेपार्ले पूर्व में आ बसा। साप्ताहिक काव्य गोष्ठी, मासिक काव्य गोष्ठी में बदल गई। जब तक बनवारी लाल जी जीवित थे महीने के अंतिम रविवार को यह गोष्ठी उनके निवास पर आयोजित होती रही, उनके देहावसान के बाद उनके बेटे कैलाश गुप्ता ने जिसे नीरव जी को दान किया गया था, अपने पिता की परंपरा को बरक़रार रखा। कैलाश गुप्ता विलेपार्ले पूर्व में अपने कार्यालय में काव्य गोष्ठी की काव्य परंपरा को अब तक जीवित रखे हुए हैं। कैलाश जी के परिवार में किसी की रुचि कविता में नहीं है, फिर भी कवि नीरव को दिए गए अपने पिता के वचन का पूरी आस्था से वे पालन कर रहे हैं। पर उनका मानना है कि उनके बाद की पीढ़ी शायद

इस परंपरा को निभा नहीं पाएगी। इसके अतिरिक्त इस शहर में कई गोष्ठियाँ शुरू हुईं, समाप्त हुईं और कुछ अभी भी लगातार साहित्यिक यश में अपना योगदान कर रही हैं। उनपर अलग से आलेख दिया जा रहा है।

इस अंक में दिवंगत हिंदी कवियों को याद किया गया है जिन्होंने इस महानगर में जीवन यापन करते हुए अपनी प्रतिभा से काव्य जगत को समृद्ध किया है। यूँ तो इस शहर में हिंदी कविता की कुछ महान हस्तियाँ भी रहीं पर मुंबई निवास के दौरान उनका काव्य सृजन प्रायः स्थगित ही रहा। जैसे डॉ. हरिवंश राय बच्चन, धर्मवीर भारती, कन्हैयालाल नंदन आदि। नीरज, रामावतार त्यागी, गोपाल सिंह नेपाली आदि सिनेमा में गीत लिखने तक ही मुंबई में रहे। वे यहाँ के स्थायी निवासी नहीं रहे। इंदीवर, अंजान, शैलेंद्र, पं. भरत व्यास आदि की प्रतिभा सिनेमा में जितनी विकसित हुई उतनी शुद्ध कविता के क्षेत्र में नहीं हुई। जबकि पंडित प्रदीप, पंडित वसंत देव, पंडित नरेंद्र शर्मा आदि ने सिनेमा और साहित्य को समान रूप से साधा। इस शहर में कई प्राध्यापक कवि हुए, कई पेशेवर कवि तो कई फक्कड़ कवि। हमने पूरी कोशिश की है कि उन समिधाओं को चुन सकें जो मुंबई हिंदी काव्य के यज्ञ में काम आ चुकी हैं। पर सीमित साधनों और सीमाओं के चलते जितना हो पाया, सुधी पाठकों की सेवा में अर्पित है। जो छूट गए उन्हें हमारे बाद कोई याद करे ऐसी कामना है। इस अंक को इस रूप में आप तक पहुँचाने में जिनका सहयोग हमें मिला, उन सब के प्रति काव्या परिवार कृतज्ञ है। हमारी कोशिश यही रहेगी – यह विराम शीघ्र समाप्त हो जाए और पुनः एक नए तेवर के साथ आपसे फिर मुलाकात हो। पाठकों एवं रचनाकारों का जो सहयोग हमें मिला उसके लिए भी हम सदैव आभारी रहेंगे।

इस अंक को तैयार करने में यथासंभव सावधानी बरती गई है। फिर भी त्रुटि की संभावना से इन्कार नहीं किया जा सकता। किसी भी तरह की त्रुटि के लिए क्षमाप्रार्थी हैं।

- काव्या परिवार

मुंबई में काव्य-गोष्ठियों की परम्परा

- हृदयेश मयंक

खानदानों एवं परिवारों की तरह साहित्य की भी अपनी विरासत होती है। इसे आगे बढ़ाने, इसके पीढ़ी-दर-पीढ़ी परिवहन का कार्य सुधी जनों के कंधों पर होता है। विरासत हमारे अतीत के स्वर्णिम पहलुओं का अक़्स होती है। साहित्य के क्षेत्र में इसका बड़ा महत्त्व है। पूर्व के साहित्यकारों एवं साहित्यिक आयोजनों को आगे बढ़ाकर या उससे प्रेरणा लेकर हम अपने वर्तमान को समृद्ध व भविष्य की नींव मज़बूत करते हैं। मुंबई में इनके बिरवों को तलाशने की एक कोशिश काव्या परिवार ने शुरू की तो मेरे हिस्से भी जाँच-पड़ताल की ज़िम्मेदारी आन पड़ी। १९७१ की बरसात में मुंबई आते ही मुझमें एक ललक जगी। आख़िर इतना बड़ा महानगर है, चालीस से पचास लाख की आबादी हिंदी भाषियों की है तो इनका साहित्यिक-सांस्कृतिक मंच ज़रूर होगा। जौनपुर में गुरुवर डॉ. श्रीपाल सिंह 'क्षेम' का सानिध्य कॉलेज में मिला था और कविता का कीड़ा कुलबुलाने लगा था। उन्हीं दिनों मुंबई से प्रकाशित होने वाले दैनिक नवभारत टाइम्स के 'आज' कॉलम में पढ़ा कि भांडुप में उत्तरी भारत हाई स्कूल में एक काव्य गोष्ठी होने वाली है। संयोजित करने वाली संस्था 'भारत भारती परिषद' थी। मैं ४ बजे विद्यालय प्रांगण में पहुँच गया। धीरे-धीरे कवियों की जमात आती रही और एक परचे पर अपना नाम पता लिखकर बैठती गई। मैंने भी अपना नाम व पता लिख दिया। लिस्ट बनाने वाले कवि थे पं. श्रीनाथ द्विवेदी। उस गोष्ठी में सर्वश्री राधेश्याम उपाध्याय, कॉ. आर.पी. पांडे, आनंद त्रिपाठी, भगवत लाल उत्पल, राज सुमन, चंद्र सेन 'कमर' आदि से मुलाकात हुई जो निरंतर आत्मीय होती गई। उस गोष्ठी से शुरू होकर भारत भारती परिषद द्वारा आयोजित अंतिम गोष्ठी तक में नियमित एक कवि की हैसियत से भाग लेता रहा। भारत भारती परिषद की नियमित गोष्ठियाँ सांताक्रुज के पोद्दार विद्यालय में होती थीं। नगर उपनगर के अनेक कवि कविताएँ पढ़ते और उस पर बहसें होतीं। इस संस्था ने तकरीबन डेढ़ सौ से अधिक गोष्ठियाँ आयोजित कीं और आज मुंबई में कविता की एक बड़ी पौध पल्लवित पुष्पित है। पं. नरेंद्र शर्मा का अभिनंदन ग्रंथ 'ज्योति कलश' भी इसी संस्था से मिला था। इन्हीं गोष्ठियों में आते-जाते पता चला कि मध्य रेलवे के उपनगर मुलुण्ड में एक गोष्ठी 'साहित्य सहकार' के बैनर तले आयोजित होती रही है जिनमें डॉ. बंशीधर पंडा, डॉ. रविनाथ सिंह, डॉ. कृष्णलाल शर्मा, भगवतलाल उत्पल, अक्षय जैन व हरिजिंदर सिंह सेठी का विशेष योगदान रहा करता था। 'साहित्य सहकार' के मित्रों से मेरी पहचान बाद में हुई पर यह मेरा दुर्भाग्य था कि इस अत्यंत ही बौद्धिक लोगों की गोष्ठी में मैं कभी उपस्थित नहीं रह सका।

भगवतलाल उत्पल का साथ होते ही मुंबई में होने वाली एक साप्ताहिक गोष्ठी में जाने का अवसर मिला वह गोष्ठी 'काव्यकुंज' के नाम से एक नीरव नाम के कवि चलाते थे। 'महाजन टी हाऊस' के साहित्य प्रेमी मालिक बनवारी लाल गुप्ता गोष्ठी के दिन दुकान बंद कर देते और कवियों को चाय नाश्ता कराते। यह गोष्ठी उनके सुपुत्र कैलाश गुप्ता द्वारा आज भी विलेपार्ले पूर्व के अग्रवाल मार्केट में संचालित की जाती है। महाजन टी हाउस में नियमित जाने वाले लोगों में से एक श्री राधेश्याम उपाध्याय इस गोष्ठी के बारे में बताते हुए उत्साहित हो जाते हैं। उस गोष्ठी में नीरव, नीलकंठ, सरस्वती कुमार दीपक, दाऊ दयाल उपाध्याय, उत्पल, कुंतल जैन, आनंद त्रिपाठी, अविनाश, पं. श्रीनाथ द्विवेदी और उस दौर के अनेक कवि-शायर उसमें भाग लेते। कवियों की एक बड़ी फौज हर महीने विलेपार्ले पहुँचती है और नियमित कविताएँ पढ़ती है। कुछ एक वर्ष पूर्व इस संस्था ने एक पुस्तक प्रकाशित कर पुराने-नये कवियों को याद किया था। श्री राधेश्याम उपाध्याय ने पुस्तक का संपादन किया था। आज भी नई-पुरानी पीढ़ी के अनेक कवि इस संस्था से जुड़े हैं। निरंतर चलनेवाली यह संस्था अब तक १०४० गोष्ठियाँ कर चुकी है। क्रम आज भी जारी है।

माटुंगा में हिंदी साहित्य संस्था नाम की एक संस्था डॉ. शारदा प्रसाद शर्मा और डॉ. रविनाथ सिंह के संयुक्त प्रयास से बनाई गई थी। उस संस्था के तत्त्वावधान में अनेक गोष्ठियाँ आयोजित की जाती रहीं। कई बौद्धिक परिचर्चाएँ व सेमिनार संस्था ने आयोजित किये। हालाँकि इसकी नियमितता बनी न रह सकी।

आपातकाल के बाद कुर्ला में एक साहित्यिक सांस्कृतिक संस्था 'स्वर संगम' का गठन किया गया। महाप्राण निराला के जन्म दिवस पर यह संस्था कई वर्षों तक कार्यक्रम करती रही। इस संस्था ने मुंशी प्रेमचंद जन्म शताब्दी के अवसर पर इप्टा, मुंबई के साथ मिलकर 'होरी' नाटक का मंचन किया था। जिसमें ए.के. हंगल व रोहिणी हटंगणी ने प्रमुख भूमिकाएँ निभाई थी। बीस वर्षों तक सक्रिय यह संस्था अभी भी कुछ एक आयोजन करती रहती है। स्व. विजयवीर त्यागी, सुंदर लाल गुप्ता, आर.डी. द्विवेदी, पीयूष, नीरज कुमार, सैयद रियाज़, आलोक भट्टाचार्य का सहयोग इस संस्था को मिलता रहता था। स्व. सरस्वती कुमार दीपक की षष्टिपूर्ति इसी संस्था ने आयोजित की थी। हिंदी उर्दू के बीच सेतु की तरह काम करनेवाली इस संस्था ने अनेक कवि सम्मेलन व मुशायरे करवाये। उर्दू के कई बड़े लेखक डॉ. राही मासूम रज़ा, अजीज़ कैशी, हसन कमाल, मज़रूह, कैफ़ी आज़मी समेत अनेक युवा लेखक इससे जुड़े थे। इस संस्था ने सौ से अधिक नियमित गोष्ठियाँ की। डॉ. राममनोहर त्रिपाठी व पं. नंदकिशोर नौटियाल का विशेष सहयोग इस

संस्था को मिलता रहा।

भारत भारती परिषद की गोष्ठियों में आनेवाले श्री शीतला प्रसाद निराला ने एक नई संस्था 'हस्ताक्षर' के नाम से बनाई। पूर्व में इस संस्था ने नुक्कड़ काव्य-गोष्ठियाँ भी आयोजित की हैं। प्रारम्भ में रामकुमार वर्मा एवं श्री रामचंद्र पाण्डे 'श्रमिक' का सहयोग भी प्रमुख रूप से रहा। आज भी निराला अपने सुपुत्रों के साथ मिलकर यह गोष्ठी नियमित रूप से सांताक्रुज पूर्व में संयोजित कर रहे हैं। इसकी लगभग २५० से ज़्यादा गोष्ठियाँ आयोजित हो चुकी हैं। काव्या परिवार की गोष्ठियाँ भी सांताक्रुज में अबाध रूप से होती आई हैं। युगीन काव्या के संपादक श्री हस्तीमल 'हस्ती' के मार्गदर्शन में होने वाली इस गोष्ठी में नंदलाल पाठक, हूबनाथ, दीप्ति मिश्रा, कविता गुप्ता, सिब्बन बैजी समेत दर्जन भर रचनाकार नियमित रूप से सहभागी होते रहे हैं। कुछ एक वर्षों से मुंबई में होने वाली नियमित गोष्ठियों में जिन्होंने सर्वाधिक ध्यान आकर्षित किया है उनमें भायंदर की संस्था 'हिंदी साहित्य शोध संस्थान' व विलेपार्ले की संस्था 'बतरस' का विशेष योगदान है। 'हिंदी साहित्य शोध संस्थान' डॉ. सुधाकर मिश्र की देखरेख में हर महीने के अंतिम रविवार को नियमित आयोजित होती रही है। इसकी एक और विशेषता रही है कि इसमें श्रोताओं की सहभागिता होती है। परिणामस्वरूप आज बीस से अधिक कवि रचनारत हैं और अपनी कविताओं का पाठ कर रहे हैं।

पिछले कुछ महीनों से एक पुरानी संस्था 'छकड़ा' पुनर्जीवित की गई है। छकड़ा एक दौर में कई प्रतिष्ठित रचनाकारों द्वारा संचालित होती रही है। गोपाल शर्मा इसे पुनर्जीवित कर इसकी गोष्ठियाँ आयोजित कर रहे हैं।

वैचारिक संस्था जनवादी लेखक संघ भी इस शहर में सक्रिय है। हालाँकि इसकी नियमित गोष्ठियाँ नहीं होतीं पर मुंबई में आये रचनाकारों का काव्यपाठ या किसी प्रतिष्ठित लेखक की स्मृति में इस संस्था ने नियमित गोष्ठियाँ की हैं। कहानी, कविता पाठ का आयोजन चर्चगेट, अंधेरी, व मीरा रोड में इस संस्था द्वारा किया जाता रहा है।

जुहू में आशालखन पाल भी 'युगांतर' नामक साहित्यिक एवं सास्कृतिक संस्था का संचालन जनवरी १९९४ से कर रही है। महीने के तीसरे रविवार को आयोजित होनेवाली इस गोष्ठी की अब तक लगभग २०० बैठकें हो चुकी हैं। संस्था नवागत रचनाकारों को मंच प्रदान करने के साथ ही रचनाओं की समीक्षा पर भी ज़ोर देती है। रचना एवं रचनाकारों के प्रचार-प्रसार हेतु पुस्तकों का विमोचन और प्रकाशन की सुविधा भी संस्था द्वारा प्रदान की जाती है।

महानगर मुंबई को हिंदी उर्दू के अनेक रचनाकारों ने अपनी उपस्थिति व कृत्यों द्वारा समृद्ध किया है। पूर्व काल में जिन लोगों ने अपना योगदान दिया था उनका उल्लेख आवश्यक है। इस शहर में शील, शिव वर्मा, अली सरदार जाफरी, मज़रूह, कैफ़ी आज़मी जैसे कवि-शायर एक दौर में सक्रिय थे। शील ने अपना प्रमुख गीत, यहीं इसी शहर में रचा था। शैलेंद्र, अनजान, पं. नरेंद्र शर्मा और बाद की पीढ़ी में गुलज़ार, जावेद अख़्तर, समीर आदि ने फिल्मों के क्षेत्र में अपना विशेष योगदान दिया है।

इसी तरह की विरासत को परेल क्षेत्र में कवयित्री कीर्ति परदेशी ने भी काफी समय तक सँभाले रखा।

यहाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि कमाठीपुरा में एक अहिंदी भाषी कवि पी.एच. दासर विगत २९ वर्षों से 'भारत काव्य मंच' नाम से नियमित काव्य गोष्ठियाँ कर रहे हैं। अहिंदी भाषी होने के बावजूद हिंदी कविता और इन गोष्ठियों के प्रति इनका समर्पण सराहनीय है। इस मंच की अब तक लगभग ३५० गोष्ठियाँ संपन्न हो चुकी हैं।

इस शहर में इन दिनों 'चौपाल' की भी बहुत चर्चा है। लेकिन इसका स्वरूप अलग है। अतुल तिवारी, शेखर सेन, अशोक बिंदल, राजेंद्र गुप्ता, कविता गुप्ता आदि इनके प्रमुख कर्णधार हैं.

आज पुरानी पीढ़ी को याद करते हुए कई ऐसे लोग हमारी स्मृति में नहीं हैं जिन्हें भी याद किया जाना चाहिए था। फिर भी सीमित समय और अपनी स्मृतियों के सहारे जो कुछ याद था उसे प्रस्तुत करते हुए हमें गर्व हो रहा है।

ए-७०१, आशीर्वाद-१, पूनम सागर कॉम्प्लेक्स,
मीरा रोड,(पूर्व), ४०११०७

काव्या के संपादक श्री हस्तीमल हस्ती को उनके साहित्यिक अवदान के लिए महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी ने राज्य स्तरीय 'साने गुरुजी साहित्य पुरस्कार २०१२' से नवाजा है. काव्या परिवार की ढेरों बधाइयाँ.

काव्या परिवार के अभिन्न सदस्य श्री डूबनाथ जी को महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी का वर्ष २०११ का 'संत नामदेव पुरस्कार' प्रदान किया गया है। यह पुरस्कार उन्हें उनकी काव्य कृति 'कौए' के लिए दिया गया है। काव्या परिवार और अपने सभी पाठकों की ओर से डूबनाथ जी को बधाई और शुभकामनाएँ।

गीत

● अनजान

लाख पुकारो

लाख पुकारो किन्तु रूप पर कोई असर कहाँ होता है
और किसी दिन सुन्दरता अनजाने पास चली आती है

अल्हड़ आँखों का सम्मोहन बरबस प्यासे मन को खींचे
किन्तु तृप्ति मिल सकी उसे कब, खिंचा चला जो इनके पीछे
रीत अजब विपरीत रूप की, जैसे इक अनबूझ पहेली
मन में सौ-सौ स्वप्न जगाकर खुद सो जाये अँखियाँ मींचे
अनुनय-विनय-विनम्र निवेदन से प्रस्तर प्रतिमा कब पिघले
जो जितना प्यासा है छवि उसको उतना ही तरसाती है

इक धुँधली-सी झलक रूप की जनम-जनम की नींद चुराये
इक हलकी-सी हँसी उम्र भर को बेनाम कसक दे जाये
कभी स्वयं जो खेले इन शीतल अंगारों से वह समझे
फूलों-सी कोमल सुषमा है दीप-शिखा की जलन छुपाये
जितना हो सम्मान मान छवि का उतना बढ़ता जाता है
और कहीं ठुकराई जाकर भी सर्वस्व लुटा आती है

जीवन के तपते मरुथल में, सुन्दरता बस इक मृगजल है
जिस पर मोहित भोली आँखें जिसको देख हृदय चंचल है
रूप और कुछ नहीं तृषित मन की अतृप्ति की परछाई है
किन्तु सत्य यह भी है इसके पीछे सारा जग पागल है
स्वयं समर्पित हो जाने की साथ जगा दे सुन्दरता में
ऐसा आकर्षण हो जिसमें प्यास उसी की बुझ पाती है

'डॉन' फिल्म के चर्चित गीत 'खइके पान बनारस वाला' के गीतकार अनजान का मूल नाम श्री लालजी पाण्डेय था। २८ अक्तूबर, १९३१ को वाराणसी में जन्मे अनजान ने बी.कॉम. तक शिक्षा पाई। ये चलचित्र जगत के प्रसिद्ध गीतकार थे। कई पुरस्कारों से सम्मानित। अनजान आज के प्रसिद्ध फिल्मी गीतकार समीर के पिताश्री हैं।

कविता

● अंगद सिंह बिसेन

भक्ति रचना

धर्म स्थापना हेतु कृष्ण लियो औतार
टूटे बन्धन जेल के महिमा अपरम्पार
काली रात कालिंदी विकट सिर पर लियो उठाय
वासुदेव सिर टोकरी, तामें कृष्ण समाय
सुख समेत पहुँचे वसु, नन्द द्वार हर्षाय
स्वागत हेतु बाबा खड़े, यसुदा गोद लगाय
आई पूतना विष लिए दूध पिलावन हेतु
चूसे, काटे, अस प्रखर, डायन गिरी अचेत
ग्वाल-बाल नटखट निपट, खेलें गेंद उछाल
गेंद गिरी मझधार में, यमुना तरंग विशाल
कूदे, जमुना माहिं, निर्भय तुम ग्वाल हित
लायो कालिया फांस, गोकुल हुआ भय मुक्त
कुटिल कंस, निर्दयी, हत्यारा नवजात शिशु
पठायो यमपुर ताहि, मुक्त कियो तुम मातु-पितु
रास रचायो, लै गोप जन, रैंजित गोपी संग
आत्मा और शरीर दोनों हुए एक रंग

इलाहाबाद के एक किसान परिवार में जन्मे अंगद सिंह बिसेन पेशे से व्यवसायी थे।

कविता

● अक्षयबर नाथ दुबे

मैं अपने लिए नहीं

मेरे अन्दर का आदमी
जब फूट-फूट कर रोता है
तब साहस तथा धर्म से कहता है
मैं अपने लिए रो रहा हूँ
देखो झूठ का बाज़ार
इतना गर्म हो गया है कि
सच को समर्थन की ज़रूरत पड़ गई है
वह मर रहा है
उसे मारने वाले की क़ीमत बढ़ गई है
चरित्र अपराध की सीमाओं से घिर गया है
दुस्साहस के नाम पर
सब जायज़ हो गया है
सेवा, सहानुभूति, दया...
दूरदर्शन से झलकाई जा रही हैं
और मेहनत की रोटी
आँसुओं से बोर-बोर कर खाई जा रही है
इसलिए मैं अपने लिए नहीं
तुम्हारे लिए रो रहा हूँ

अक्षयबर नाथ दुबे पेशे से अध्यापक थे।

कविता

● अनन्तकुमार पाषाण

जन्म-जन्मान्तर

आज दोपहर को कई साल बाद
वही चिड़िया रह-रह कर बोल रही है
जिसकी आवाज की नक़ल कर तुम मुझे
मक्के के खेतों की मेड़ से बुलाती थीं
कई जनम बीतने पर भी याद है
जाड़े की दुपहर में अधमैली उड़ती धानी ओढ़नी
और कुनमुनाती नहर के उज्ज्वल जल से टकरा
बाहर निकले फ़ीरोज़ी ओंठो पर नाचती रौशनी
जुड़ी हुई भौहों के ऊपर हथेली छाँव किए
लगती थीं तुम जैसे सीधी-तनी मोरनी
देखता हूँ अपने को भी
धूल-भरे कच्चे रास्तों पर
बैलगाड़ियों के पहियों की धूल में बनी लहरी लकीरें
इमली की पीली झरी पत्तियों से भरी हुई
काटता मिटता मैं पहुँचता था तुम्हारे पास
उसके बाद फिर जन्म-जन्मान्तर है
तुम मुझे खोती गईं हर जनम
सोचती क्यों क्यों क्यों
और इस बार भी बनी हो विश्व-विश्रुत नृत्यांगना
कितनी बार बरामदों से भागते साये
पार कर गये अंगना
हाथ हिले हाय मगर बजा नहीं कंगना
रूप का यौवन का मीठा अभिमान
ढीले मोटे गजरे सा रास्ते में गिरेगा...
और उसी जन्म की अंतिम गली पार
तुम्हारा कवि तुम्हें मिलेगा

अपने समय के जाने-माने कवि अनंत कुमार पाषाण बम्बई के सिद्धार्थ कॉलेज में अंग्रेज़ी के विभागाध्यक्ष रहे। इनका संग्रह 'अमलतास' काफी चर्चित रहा।

गीत

● इन्दीवर

मीत भले बैरी बन जाएँ भले न मुझको प्यार मिले
हर ग़म में जी सकता हूँ माँ तेरा अगर दुलार मिले

तेरा अगर दुलार मिले तो हर ग़म में जी सकता हूँ
मैं शंकर की तरह ज़हर का हर आँसू पी सकता हूँ
तू आंचल से आँसू पोंछे फिर ग़म क्या कर सकता है
स्नेहमयी हो नज़र ज़ख्म कैसा भी हो भर सकता है
मन को मेरे तेरी ममताओं का यदि आधार मिले
हर ग़म में जी सकता हूँ माँ तेरा अगर दुलार मिले

पीठ ठोक दे तू मेरी मैं मुमकिन नहीं पिछड़ जाऊँ
दुनिया तो दुनिया ही है मैं किस्मत से भी लड़ जाऊँ
मुझे जहाँ की क्या परवा मैं दो जहान भी ठुकरा दूँ
सर पर तेरा हाथ रहे तो आसमान भी ठुकरा दूँ
और चाहिये क्या यदि तेरे चरणों का संसार मिले
हर ग़म में जी सकता हूँ माँ तेरा अगर दुलार मिले

हो तेरी आशीष अगर हर शाप मुझे वरदान बने
पत्थर को भी छू दूँ मैं तो पत्थर भी भगवान बने
गीत बदल जाये गीता में थक जाये संसार जहाँ
कलम वहाँ पर चले टूटकर रह जाये तलवार जहाँ
हर नैया को माझी औ' हर माझी को पतवार मिले
हर ग़म में जी सकता हूँ माँ तेरा अगर दुलार मिले

श्यामलाल बाबू राय उर्फ इंदीवर का जन्म झाँसी जिले के बरुआसागर ग्राम में १९२४ को हुआ था। होठों से छू लो तुम... जैसे प्रसिद्ध गीतों के सर्जक इंदीवर जी ने लगभग ३०० गीत लिखे। 'प्यार बाँटते चलो' प्रकाशित कविता-संग्रह।

कुण्डलिया

● कपिल कुमार

(१)

जीना-मरना ग़म-खुशी सब कुछ रब के हाथ
लाए थे क्या साथ में जाएगा क्या साथ
जाएगा क्या साथ नहीं है कुछ भी अपना
जब खुल जाए आँख टूट जाता हर सपना
कहे 'कपिल' कविराय जिदगी एक नगीना
चोरी हो तो मौत पास में हो तो जीना

(२)

नारी जीवन में बही सदा सुकोमल धार
नर के मन में जागता हर पल नया निखार
हर पल नया निखार समर्पण नारी करती
ममता से दिन-रात सृष्टि का आँचल भरती
कहे 'कपिल' कविराय बहन बेटी महतारी
पत्नी बनकर वंश बढ़ाती रहती नारी

(३)

बनते जाते जानकर भाई-भाई आज
एक दूसरे का नहीं करते तनिक लिहाज
करते तनिक लिहाज गलत भाषा भी बोले
अपना-अपना राज खुले आँगन में खोले
कहे 'कपिल' कविराय दूध की तरह उफनते
घर के भीतर अलग और बाहर कुछ बनते

कपिल कुमार का जन्म खुर्जा (उ.प्र.) में हुआ था। वे कवि, अभिनेता और फिल्मी फोटोग्राफर भी थे। 'कुण्डली सम्राट' के नाम से भी उनकी पहचान थी। 'कहे कपिल कविराय'(कुण्डलियाँ), नन्हे मुन्हे (बाल कविताएँ) प्रकाशित काव्य संग्रह हैं।

कविता

● कमल शुक्ल

विष-दर्प

(रूस के विघटन पर)

यह लड़ाई तो पहले से ही तै थी
पहले ही लिखे जा चुके थे
सारे दस्तावेज़
फ़क्त इंतज़ार था मौसम के सुधरने का
इंतज़ार था-उस नींद के टूटने का
जो उँगलियों से टपकती है
इंतज़ार था उस रक्ताभ सूर्य का
जो दिलों को चीरकर उदित होता है
इंतज़ार था उस विस्फोट का
जो इस ख़ौफ़नाक चुप को चिथड़े कर दे
तुमने मुहावरों को उलटकर तो देखा होता
वहाँ केवल आँसू ही नहीं थे
दुखों का संकेत
केवल मेघ ही नहीं था
वायु का संकल्प
और ना ही परास्त जीवन था
दग्ध समय का इतिहास
वहां तो अदृश्य था हमलावर
खुल रहा था सन्नाटा
परत दर परत ख़ामोश
बरस रहा था अँधेरा
बिल-बिला रहे थे साँप
और साँपों में बदल रहा था मनुष्य
ज़हर से भरा हुआ नीलाभ
यह लड़ाई तो पहले से ही तै थी

कमल कुमार पेशे से इंटीरियर डेकोरेटर थे। वे अच्छे कवि, लघुकथाकार और चित्रकार भी थे। काव्य संकलन 'व्यर्थ अमृत' प्रकाशित।

मुक्तक

● किशोरीरमण टण्डन

दर्द अपना-सा और का माने
जान अपनी-सी और की जाने
आदमियत का यह तक़ाज़ा है
आदमी आदमी को पहचाने

●

मरना न पड़े जिसमें वो जीना कैसा
डूबा न कभी हो वह सफ़ीना कैसा
आता है पसीना जो मशक्क़त के बिना
वह बूँद है पानी की पसीना कैसा

जन्म : ११ नवम्बर, १९१४ को जोधपुर में। 'पराग' मासिक के सह-संपादक रहे। प्रकाशित रचनाएँ : जीवन-सन्देश, बटोही, वैशाली, आँसू और मुस्कान, नगरसुंदरी, राजकन्या, हिन्दी की श्रेष्ठ हास्य कथाएँ आदि। व्यंग के सफल कवि ।

कविता

● कुन्तल कुमार जैन

न लेने की खुशी

मेरी कार स्टार्ट नहीं हो रही थी
मेरे ही जैसे
कई सफ़ेदपोश
निर्दयता से
यह घटना देख रहे थे
जिनमें से किसी को बुलाने की
मेरी हिम्मत नहीं हो रही थी
इतने में
फुटपाथ पर सोने वाले ने आकर कहा
मैं धक्का लगाऊँ
शायद कार स्टार्ट हो जाए
वह धक्का लगाने लगा
लेकिन स्थिति में
कोई परिवर्तन नहीं हुआ
उसने नली से मुँह लगाकर पेट्रोल खींचा
लेकिन पेट्रोल खत्म था
वह पेट्रोल ले आया और गाड़ी स्टार्ट हुई...
मैंने उसे
पाँच रुपये देने चाहे पहले
उसने लेने से आनाकानी की
फिर साफ़ इनकार किया
फिर रुपये न लेने की खुशी
मनाता हुआ चला गया...
मैं उसे आप सबसे हाथ मिलवाने के लिए
कविता में ले आया हूँ

राजस्थान में जन्मे कुंतल कुमार जैन समकालीन कविता के प्रमुख हस्ताक्षर थे। कविता में अनूठे कथ्य, अनूठे विषय के लिए ख्यात थे। प्रकाशित कृतियाँ हैं- 'पहिये', 'समय का रास्ता', 'कुंतल कुमार की प्रतिनिधि कविताएँ'।

कविता

• कुमार शैलेंद्र

धूप की कचहरी

नाम सुबह शाम के
स्वर्ण बिना दाम के
श्रम के हवन कुंड में दिन
समिधा बनकर जले
धूप की कचहरी में सूरज के फ़ैसले
कालजयी बरगद के व्यापक फैलाव-सी
सूर्यमुखी इच्छाएँ दहकतीं अलाव-सी
होम हुई कितनी ही आवृत्तियाँ उम्र की
शाश्वत मृगतृष्णा में तृप्ति बस पड़ाव-सी
आस बीज चट्टानी सदियाँ भेदे फले
धूप की कचहरी में सूरज के फ़ैसले
एक सहज सत्य किंतु उलझा शैवाल-सा
भरम बंध जीवन का अनदेखे जाल-सा
बाँच रही अर्थ भेद ऋतुओं की व्याख्याएँ
मन पवन प्रवाह बद्ध नौका में फल-सा
लक्ष्यहीन दिशा बोध मोह पाश में पले
धूप की कचहरी में सूरज के फ़ैसले
वृत्तमयी वृत्तियों के कर्मजनित चक्रवात
वही उदय वही अस्त शून्य शाम शून्य प्रात
बिंदु-बिंदु कालखंड श्वास से तराश रहे
एक अंत में अनंत यात्रा का सूत्रपात
लोक पर विसर्जन की सर्जन का रथ चले
धूप की कचहरी में सूरज के फ़ैसले

आकाशवाणी से सेवा-निवृत्त फिल्म एवं सीरियल लेखन।'हिलोर' (लोकगीत) एवं 'धूप की कचहरी' (गीत संग्रह) प्रकाशित।

ग़ज़ल

● चद्रसेन 'क़मर'

दुनिया की ज़िद कि वो जो कहे वो किया करे
दिल की मगर ये धुन है कि अपना कहा करे

नेता समाज देश बिरहमिन रिवाज़ बुत
किस-किस से इस जहान में कोई वफ़ा करे

जम्हूरियत ये वैसी है वैसा समाजवाद
सो जाएँ भूखे सैकड़ों और इक मज़ा करे

ग़म हद से बढ़ चुका है खुदाया कोई हँसाए
ऐसी हंसी जो जीने की हिम्मत अता करे

मसरूफ़ ज़िन्दगी में भला किसको इतना होश
अपना नहीं तो दूसरे ही का भला करे

वो सुनने वाला सुनता है हर एक की 'क़मर'
इन्साँ खुलूसो दिल से अगर इल्तिज़ा करे

श्री चंद्रसेन 'क़मर' प्रवृत्ति से शायर और पेशे से इंजीनियरिंग कंपनी में तकनीकी सहायक थे।

मुक्तक

● चंदनमल 'चाँद'

गतिशील करो चरणों को मंज़िल पास नहीं है
कालचक्र गतिमान किसी का दास नहीं है
जीवन की हर साँस सार्थक कर डालो तुम
साँसों पर पल भर का विश्वास नहीं है

साँस लेना ही सिर्फ़ ज़िंदगानी नहीं है
बीस वर्ष की उम्र का नाम जवानी नहीं है
लपट बनकर जीना घड़ी भर का भी सार्थक है
सुलग-सुलग जीने का कोई मानी नहीं है

दुआ नहीं हमें तो दवा चाहिए
घुटन से मुक्त करे वो हवा चाहिए
सुधा लोलुप देवों की कमी नहीं
धरा को विषपायी शिवा चाहिए

चोट खाकर रो पड़े वो आदमी नादान है
लड़खड़ाते ग़ैर पर हँसना बड़ा आसान है
थाम ले जो हाथ गिरते आदमी का
आदमी होता वही इंसान है

चंदनमल चाँद का जन्म डूंगरगढ़ राजस्थान में हुआ था। वे कवि, कुशल वक्ता और समाजसेवक भी थे। उनके नाटक, काव्य संग्रह सहित कई कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं।

ग़ज़ल

● जीवितराम सेतपाल

हम भी किसी की राह में आँखें बिछा बैठे
अपने ही दिल से हम सनम हो ख़फ़ा बैठे

करती ख़ता हैं आँखें पड़ती मार दिल पर
अपराध यह किसका दे किसको सज़ा बैठे

किए बन्द दिल के दरवाज़े खिड़कियाँ सभी
फिर भी किरण इक आई दे उसको हवा बैठे

खाई जो कसम फिर से वह तोड़ डाली है
इस बार देख फिर से दिल्लगी लगा बैठे

कवि, प्राध्यापक और नेशनल कॉलेज के पूर्व विभागाध्यक्ष श्री जीवितराम सेतपाल 'प्रोत्साहन' पत्रिका का संपादन भी करते थे। उनकी 'नेता पुराण' (दोहा संग्रह), तुम्हारे नाम (पर्यटन) और 'पोस्टकार्ड' लघुकथा संग्रह प्रकाशित हैं। अनेक अनूदित पुस्तकें।

गीत

● दाऊदत्त उपाध्याय

दीपदान

निशि दिन ध्यान किया करता हूँ
अहरह ध्यान किया करता हूँ
रोम रोम में रमे पिया का
प्रतिपल नाम लिया करता हूँ

मेरा ध्यान न ऐसा वैसा
जो सहसा अस्थिर हो जाये
शंकर की समाधि सा निश्चल
कोटि कोटि कंदर्व कँपाये
अलख पिया की एक झलक की
लख-लख ज्योति जिया करता हूँ

वो मेरा जीवन-ध्रुव-तारा
ममता-मरु में सुर सरि-धारा
मन की नौका की मंज़िल का
पास किन्तु वह दूर किनारा
जिसको पाने को प्रवाह में
दीपक दान किया करता हूँ

मथुरा में जन्मे, अध्यापक, कवि, लेखक एवं पत्रकार दाऊदत्त उपाध्याय नगर के अनेक सांस्कृतिक गतिविधियों के सफल संचालक रहे। हिन्दी की सेवा ही जीवन का लक्ष्य था। फिल्मी-गीतकार भी थे। कवि नीरव के साथी कवियों में से एक। इन्होंने 'बम्बई के हिंदी कवि' का सम्पादन भी किया था।

गीत

● पं. नरेंद्र शर्मा

न जाने कब मिलेंगे

आज के बिछुड़े न जाने कब मिलेंगे
आज से दो प्रेम-योगी अब वियोगी ही रहेंगे
आज के बिछुड़े न जाने कब मिलेंगे
सत्य हो यदि कल्प की भी कल्पना कर धीर बाँधूँ
किन्तु कैसे व्यर्थ की आशा लिए यह योग साधूँ
जानता हूँ अब न हम-तुम मिल सकेंगे
आज के बिछुड़े न जाने कब मिलेंगे
आयगा मधुमास फिर भी आयगी श्यामल घटा घिर
आँख भरकर देख लो अब मैं न आऊँगा कभी फिर
प्राण तन से बिछुड़कर कैसे मिलेंगे
आज के बिछुड़े न जाने कब मिलेंगे
अब न रोना व्यर्थ होगा हर घड़ी आँसू बहाना
आज से अपने वियोगी हृदय को हँसना सिखाना
अब न हँसने के लिए हम-तुम मिलेंगे
आज के बिछुड़े न जाने कब मिलेंगे
आज से हम-तुम गिनेंगे एक ही नभ के सितारे
दूर होंगे पर सदा को ज्यों नदी के दो किनारे
सिन्धु-तट पर भी न जो दो मिल सकेंगे
आज के बिछुड़े न जाने कब मिलेंगे
तट नदी के भग्न उर के दो विभागों के सदृश हैं
चीर जिनकी विश्व की गति वह रही है वे विवश हैं
एक अथ-इति पर न पथ में मिल सकेंगे
आज के बिछुड़े न जाने कब मिलेंगे
यदि मुझे उस पास के भी मिलन का विश्वास होता
सत्य कहता हूँ न मैं असहाय या निरुपाय होता
किन्तु क्या अब स्वप्न में भी मिल सकेंगे
आज के बिछुड़े न जाने कब मिलेंगे
आह अन्तिम रात वह बैठी रहीं तुम पास मेरे
शीश कन्धे पर धरे घन-कुन्तलों से गात घेरे
क्षीण स्वर में कहा था 'अब कब मिलेंगे?'

'ज्योतिकलश छलके' जैसे अमरगीत के गीतकार पं. नरेंद्र शर्मा का जन्म जहाँगीर खुर्जा (उ.प्र.) में हुआ था। वे आकाशवाणी, विविध भारती से सेवानिवृत्त हुए थे। पलाशवन, प्रभातफेरी, द्रौपदी, कामिनी, उत्तरजय, सुवर्णा 'सुवीरा' कथा-काव्य खंडकाव्य नाटक आदि तमाम विधाओं में सृजन। लगभग २० कृतियाँ प्रकाशित। फिल्मों में भी गीत-संवाद लेखन किया।

ग़ज़ल

• नीरज कुमार

बात की बात में दस्तार बदल जाते हैं
कितनी आसानी से क़िरदार बदल जाते हैं

ग़ैर मुमकिन ही जो हो जाए तो करवाएँ फ़साद
हम तो अफ़वा पे ही घरबार बदल जाते हैं

आप पहचान भी जाएँ तो न पहचानेंगे
भेष पल भर में ये अय्यार बदल जाते हैं

काम आते हैं सिपह ही सरे-मैदाने-जंग
वक्त आता है तो सालार बदल जाते हैं

हर फ़सादात में बँट जाती है मज़हब की अफ़ीम
दोस्त बचपन के भी इक बार बदल जाते हैं

दोस्तों में लोकप्रिय नीरज कुमार एक शायर थे और ऊरूज की अच्छी जानकारी रखते थे। 'मैं कहता आँखन की देखी' नाम से काव्य-संग्रह प्रकाशित।

कविता

● नीरव

मेरे सपने बाकी हैं

रात ले रही अंतिम साँसें, पर मेरे सपने बाकी हैं
क्या हो जाता और एक यदि
करवट सुबह बदल लेती
तिमिर गोद में पड़ी चाँदनी
क्षण भर और सिसक लेती
जब कि सितारों की आँखों से, कुछ आँसू बहने बाकी हैं
क्यों शीतल संतप्त स्वरों की
स्तब्ध हुई सागर की सरगम
मौन किनारों कण-कण में
रह गया भटकता ध्वनि संगम
जब लहरों के अधरों से भी कुछ गीत बिखरने बाकी हैं
पीकर तम के घूँट हो गई रे!
दीप शिखा, मन मतवाली
बढ़ी जा रही, जले, अधजले
परवानों से भरती प्याली
यद्यपि उसको अभी और भी, कुछ प्यार परखने बाकी है
मिला कली से मधुरस अलि को
इतना बेहोश बना डाला
जो मरण-कोष में फँसा, समझकर
सुंदर सुरभित मधुशाला
यद्यपि अभी उपवन में कितने मधुमास मचलने बाकी हैं
किस प्रमाद में विसुध बनी-सी
यह बंद समीर लगी बहने
जो साँसों में छिपी कहानी
उछ्वासों से लगी बदलने
अभी वेदना के उर में, जब उद्गार उभरने बाकी हैं

इनका पूरा नाम था रविचंद्र शास्त्री 'नीरव', ये आयुर्वेदाचार्य भी थे। बम्बई में काव्यकुंज के जन्मदाता के रूप में उन्हें जाना जाता है। बम्बई की ज़वेरी बाज़ार की जूना सट्टा गली का नामकरण 'नीरव गली' इन्हीं की स्मृति में किया गया।

गीत

● नीलकण्ठ तिवारी

बेच दो ईमान तुम....

बेच दो ईमान तुम, दुनिया की दौलत लूट लो
मैं गरीबी में पला ईमान केवल चाहता हूँ
तुम धरा के फूल नभ के चाँद तारे लूट लो
मैं धरा की धूल का वरदान केवल चाहता हूँ

ऐ विषैली प्यास वालो! तुम सदा प्यासे रहोगे
खून तुम इन्सानियत का ही सदा पीते रहोगे
मैं स्वयं जलती चिता हूँ, आग अपनी ही पियूँगा
मैं चिता से चाँदनी का दान केवल चाहता हूँ

चाहिए मेवा तुम्हें तुम ढोंग सेवा का रचाओ
झूठ के बाज़ार में, दूकान तुम अपनी सजाओ
बीन लो तिनके सभी, तुम हर सिसकती झोंपड़ी के
मैं तो तिनकों में छिपा, तूफान केवल चाहता हूँ

तुम बुरे कामों से माँगो भीख ऊँचे नाम की
मरघटों में भी सजाओ सेज तुम आराम की
राख बनकर किन्तु मैं तो मरघटों की खाक से
प्रेम-मन्दिर का नया निर्माण केवल चाहता हूँ

निर्बलों की लाश पर तुम स्वार्थ को नंगा नचाओ
और दिन के रक्त से तुम, रात अपनी जगमगाओ
जिन आँसुओं से कृष्ण ने धोये सुदामा के चरण
उन आँसुओं का मैं सबल बलिदान केवल चाहता हूँ

नीलकण्ठजी लोकप्रिय कवि थे और फिल्म प्रभाग में कार्यरत थे।

कविता

• पं. प्रदीप

चल अकेला

चल अकेला चल अकेला चल अकेला
तेरा मेला पीछे छूटा राही चल अकेला

हज़ारों मील लम्बे रास्ते तुझको बुलाते
यहाँ दुखड़े सहने के वास्ते तुझको बुलाते
है कौन सा वो इन्सान यहाँ पे
जिसने दु:ख ना झेला
चल अकेला चल अकेला चल
अकेला...

तेरा कोई साथ न दे तो
तू खुद से प्रीत जोड़ ले
बिछौना धरती को करके
अरे आकाश ओढ़ ले
पूरा खेल अभी जीवन का
तूने कहाँ है खेला
चल अकेला चल अकेला चल अकेला
तेरा मेला पीछे छूटा राही चल अकेला

रामचंद्र नारायणजी द्विवेदी उर्फ कवि प्रदीप का जन्म ६ फरवरी १९१५ बड़नगर उज्जैन में हुआ था। हम लाये हैं तूफान से..., साबरमती के संत तूने..., आओ बच्चों तुम्हें दिखाएँ..., चल अकेला चल अकेला..... ऐ मेरे वतन के लोगों..., दूर हटो ऐ दुनिया वालों हिंदुस्तान हमारा है... जैसे अति लोकप्रिय गीतों के रचयिता प्रदीप ने ७२ फिल्मों के लिए गीत लिखे। अपने इन यादगार गीतों के लिए उन्हें भारत सरकार द्वारा १९९७-९८ में दादा साहब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित किया गया। लगभग १७०० गीतों का सृजन।

गीत

• पुरुषोत्तम दुबे

मैंने देखा है....

मैंने देखा है धरती को बड़े पास से
केवल देखा नहीं देखकर परखा भी है
धरती जिसपर फूल बिलखतें काँटे हँसते
मरुस्थलों के पैर पूजता है गंगाजल
मिट्टी के पुतलों से पर्वत टकराते हैं
हरियाली पर कोड़े बरसाता दावानल
मैंने देखा है दुनिया को बड़े पास से
केवल देखा नहीं देखकर परखा भी है
दुनिया जिस में शान्ति कफन बाँधे फिरती है
और अशांति पर चँवर डुलाता है सिंहासन
दुनिया जिसमें हिंसा की गोली से पीड़ित
डोला करता रुग्ण अहिंसा का पद्मासन
मैंने देखा है जीवन को बड़े पास से
केवल देखा नहीं देखकर परखा भी है
जीवन जिसका सत्य सिसकता है कुटियों में
और झूठ महलों में मौज उड़ाया करता
जीवन जिसका न्याय सड़ा करता जेलों में
और अनय खुशियों के दीप जलाया करता
मैंने देखा है अग-जग को बड़े पास से
केवल देखा नहीं देखकर परखा भी है
जहाँ चाँदनी ढोती है कलंक जीवन भर
और अमावस तारों से सम्मानित होती
जहाँ भटकते मोती-माणिक अँधियारे में
और कोयलों को प्रकाश की किरणें धोतीं
मैंने देखा अच्छा-बुरा इन्हीं आँखों से
केवल देखा नहीं देखकर परखा भी है

पुरुषोत्तम दुबे हिंदी प्रेमी और मुंबई की काव्य गोष्ठियों के उल्लेखनीय कवि थे।

क्षणिकाएँ

● डॉ. बंशीधर पंडा

प्रिय वासुदेवन

प्रिय पद्मनाभन्
तुम रुष्ट हो गए हो यों
जैसे नहीं है कोई
रिश्ता हम दोनों में
जैसे नहीं है कोई
प्रीति हम दोनों की
मानो हम अजाने हों
और किसी परदेशी सत्ता के हस्तक हों
पीड़क बेगाने हों
कैसे समझाएँ हम

•

प्रिय वासुदेवन्
तुम खीज गए ऐसे ज्यों
हिमगिरि तुम्हारा नहीं
गंगा तुम्हारी नहीं
विंध्यवत तुम्हारा नहीं
नर्मदा तुम्हारी नहीं
गोकुल तुम्हारा नहीं
काशी तुम्हारी नहीं
चित्रकूट भी तो क्या
साँची तुम्हारी नहीं

•

प्रिय रामनाथन्
तुम भूल गये
भारत के जनमन को
अगणित असंख्य
उन थके वृद्ध चरणों को
सेतुबंध दर्शन के
प्यासे आसक्तों को
निर्वासित राम के
चरणानुरागी को

•

प्रिय लोकनाथन्
हम शब्दहीन
मौन
बस विस्मित है!
सिहर गई आशाएँ
काँप गए सपने सब
नवयुग के
समताहित नूतन संघर्षों के
जन जन की मैत्री के
श्रमित दलित पीड़ित
नवमानव की मुक्ति के
लोक स्वातंत्र्य
लोकभक्ति
लोक सेवा के!

•

प्रिय त्यागराजन्
हम व्यथित हैं
दु:खी है
तुम्हें देख देख संतप्त
उत्तेजित
....आक्रोशित
भटके भरमाये से
आशंकित खोये से
सलोनी सत्यमूर्ति को बियोगे से

ओरछा में जन्मे श्री बंशीधर पंडा ने एम.ए., एल.एल.बी; पी.एच.डी. तक की शिक्षा प्राप्त की। सोमैया कॉलेज, घाटकोपर में हिन्दी-विभागाध्य थे। इन्होंने इलाहाबाद की ऐतिहासिक संस्था 'परिमल' से लेखन की शुरुआत की। एक दौर में कोकिल कंठी गीतकार के रूप में विख्यात रहे। इन्होंने 'साहित्य सहकार' नामक संस्था की स्थापना भी की।

गीत

• पुरुषोत्तम दुबे

मैंने देखा है....

मैंने देखा है धरती को बड़े पास से
केवल देखा नहीं देखकर परखा भी है
धरती जिसपर फूल बिलखतें काँटे हँसते
मरुस्थलों के पैर पूजता है गंगाजल
मिट्टी के पुतलों से पर्वत टकराते हैं
हरियाली पर कोड़े बरसाता दावानल
मैंने देखा है दुनिया को बड़े पास से
केवल देखा नहीं देखकर परखा भी है
दुनिया जिस में शान्ति कफन बाँधे फिरती है
और अशांति पर चँवर डुलाता है सिंहासन
दुनिया जिसमें हिंसा की गोली से पीड़ित
डोला करता रुग्ण अहिंसा का पद्मासन
मैंने देखा है जीवन को बड़े पास से
केवल देखा नहीं देखकर परखा भी है
जीवन जिसका सत्य सिसकता है कुटियों में
और झूठ महलों में मौज उड़ाया करता
जीवन जिसका न्याय सड़ा करता जेलों में
और अनय खुशियों के दीप जलाया करता
मैंने देखा है अग-जग को बड़े पास से
केवल देखा नहीं देखकर परखा भी है
जहाँ चाँदनी ढोती है कलंक जीवन भर
और अमावस तारों से सम्मानित होती
जहाँ भटकते मोती-माणिक अँधियारे में
और कोयलों को प्रकाश की किरणें धोतीं
मैंने देखा अच्छा-बुरा इन्हीं आँखों से
केवल देखा नहीं देखकर परखा भी है

पुरुषोत्तम दुबे हिंदी प्रेमी और मुंबई की काव्य गोष्ठियों के उल्लेखनीय कवि थे।

क्षणिकाएँ

● डॉ. बंशीधर पंडा

प्रिय वासुदेवन

प्रिय पद्मनाभन्
तुम रुष्ट हो गए हो यों
जैसे नहीं है कोई
रिश्ता हम दोनों में
जैसे नहीं है कोई
प्रीति हम दोनों की
मानो हम अजाने हों
और किसी परदेशी सत्ता के हस्तक हों
पीड़क बेगाने हों
कैसे समझाएँ हम

●

प्रिय वासुदेवन्
तुम खीज गए ऐसे ज्यों
हिमगिरि तुम्हारा नहीं
गंगा तुम्हारी नहीं
विंध्यवत तुम्हारा नहीं
नर्मदा तुम्हारी नहीं
गोकुल तुम्हारा नहीं
काशी तुम्हारी नहीं
चित्रकूट भी तो क्या
साँची तुम्हारी नहीं

●

प्रिय रामनाथन्
तुम भूल गये
भारत के जनमन को
अगणित असंख्य
उन थके वृद्ध चरणों को
सेतुबंध दर्शन के
प्यासे आसक्तों को
निर्वासित राम के
चरणानुरागी को

●

प्रिय लोकनाथन्
हम शब्दहीन
मौन
बस विस्मित है!
सिहर गई आशाएँ
काँप गए सपने सब
नवयुग के
समताहित नूतन संघर्षो के
जन जन की मैत्री के
श्रमित दलित पीड़ित
नवमानव की मुक्ति के
लोक स्वातंत्र्य
लोकभक्ति
लोक सेवा के!

●

प्रिय त्यागराजन्
हम व्यथित हैं
दु:खी है
तुम्हें देख देख संतप्त
उत्तेजित
....आक्रोशित
भटके भरमाये से
आशंकित खोये से
सलोनी सत्यमूर्ति को बियोगे से

ओरछा में जन्मे श्री बंशीधर पंडा ने एम.ए., एल.एल.बी; पी.एच.डी. तक की शिक्षा प्राप्त की। सोमैया कॉलेज, घाटकोपर में हिन्दी-विभागाध्य थे। इन्होंने इलाहाबाद की ऐतिहासिक संस्था 'परिमल' से लेखन की शुरुआत की। एक दौर में कोकिल कंठी गीतकार के रूप में विख्यात रहे। इन्होंने 'साहित्य सहकार' नामक संस्था की स्थापना भी की।

मुक्तक

● श्रीमती बिजलीरानी चौधरी

दु:खों के घूँट पी-पी कर
ख़ुशी के फूल बिखराओ
सभी मुश्किल का हल होगा
मगर तुम आत्म-बल लाओ

अगर आपस में मिलजुल कर
करोगे काम कोई भी,
सफलता चरण चूमेंगी
सबक हर इक को समझाओ

श्रीमती बिजलीरानी चौधरी का जन्म १५ नवम्बर, १९२२ को जौनपुर में हुआ था। उनकी शिक्षा इलाहाबाद एवं बम्बई में पूरी हुई। राष्ट्रभाषा कोविद, साहित्य-सुधाकर, बिजलीरानी चौधरी गर्ल्स हाईस्कूल, बम्बई में अध्यापिका रहीं। मातृभाषा बाङ्ला होते हुए भी हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी भाषाओं का अच्छा ज्ञान था।

कविता

• बृजेंद्र गौड़

छिप गया चाँद, संबंध तोड़

मन दीप, देह की बाती है
जलते-जलते जल जाती है

छिप गया चाँद सम्बन्ध तोड़
तारों से ही लग गई होड़
हर पथ पर सौ सौ मिले मोड़

माटी का दीप बनाया क्यों
बाती से तेल जलाया क्यों
कृत्रिम त्यौहार मनाया क्यों

जलने-बुझने का क्रम समीप
जलकर बुझते हैं सभी दीप
मोती ढलका, मुँद गया सीप

यह कैसा नियम, धर्म कैसा
यह कैसा समय, कर्म कैसा
यह कैसा हृदय, मर्म कैसा

हर साँस लौटकर आती है
मन दीप, देह की बाती है
जलते जलते जल जाती है

कितने विचित्र हैं यहाँ लोग
माया, ममता का लिए रोग
भ्रम के वश हो, सुख रहे भोग

लेकिन दुख की अनन्त घड़ियाँ
गुम्फित हैं मन की सब कड़ियाँ
सुख-दुख में आंसू की लड़ियाँ

जो देना था, कुछ नहीं दिया
सब केवल अपने लिए किया
मानव मरने के लिए जिया

क्यों आदर, क्यों ममता दुलार
क्यों सुख जीवन का बना भार
क्यों दुख को सब समझे बहार

छलना छिपकर मुसकाती है
मन दीप, देह की बाती है
जलते-जलते जल जाती है

बृजेंद्र गौड़ श्रेष्ठ कवि और कथाकार थे।

गीत

● ब्रजेश पाठक 'मौन'

कजराये नयन

देहरी क्यों लाँघता है
आज गदराया बदन
क्या किसी मन मीत का
संदेश ले आया पवन
या किसी शहनाई के स्वर ने
तुम्हें जादू किया
या दिखाई दे गया है
स्वप्न में मन का पिया
कंचुकी के बंध ढीले
हो रहे क्यों बार-बार
क्यों लजाये जा रहे हैं
आज कजराये नयन
और ही है रंग कुछ
गालों पे तेरे मनचली
फूल जैसी खिल रही
कचनार की कोमल कली
बाग ने सींचा या भँवरों का
बुलावा आ गया
जो हथेली से छिपाया
जा रहा पूरा गगन
मौन अधरों में दबी है
बात किसके प्यार की
दे रही बिंदिया उलेहना
आज क्यों श्रृंगार की
गर्म साँसें उठ रही हैं
मन ये बेकाबू हुआ
जैसे शादी के किसी
मंडप में होता है हवन

बहुमुखी प्रतिभा के धनी ब्रजेश पाठक मौन का जन्म उत्तर प्रदेश के झाँसी जिले में हुआ था। वे एक कवि, अभिनेता और दुर्लभ वस्तुओं के संग्रहकर्ता के रूप में ख्यात रहे।

कविता

● भगवतलाल 'उत्पल'

क्या है दरकार

हमें साफ-साफ बताएँ सरकार
हम आपकी टेक हैं, ठीहा हैं, पीढ़ा हैं
हम आप की कुर्सी हैं, आसन हैं, सिंहासन हैं
इस पर बैठिए, सुस्ताइए, हँसिए, मुस्कराइये
पर मेरे मुँह पर लगाम मत लगाइए

आप हमें देते हैं सरपंच, विधायक और दरोगा
जिससे डगमगाता हुआ चलता है जीवन का डोंगा
आपके पास हल है, ज़मीन है और पैना है

आपके लिए हमें जीना है, मरना है, खपना है
पर एक मरकहा सवाल उठ खड़ा है
क्या सत्तासीन देश से भी बड़ा है!

हमने केवल झूठ के सामने
सच की पीठ थपथपाई है
दुहाई है,
बताइए हुज़ूर
कहाँ है इसमें मेरा कसूर?

भगवतलाल उत्पल कवि और अध्यापक थे। कविताओं में अलग तेवर के लिए जाने जाते थे। 'पानी के ताप से' उनका प्रकाशित काव्य संग्रह है।

मुक्तक

● पं. भरत व्यास

आदमी से

(१)

अपनी धरती अपना ही आकाश पैदा कर
अपनी मेहनत से नया इतिहास पैदा कर
माँगने से कब मदद मिलती अरे भिक्षुक
अपनी हर इक श्वास में विश्वास पैदा कर

(२)

चल पड़ा जो चीर कर अन्धेर है
राह में जो रुकता नहीं वह शेर है
जब तक जलता रहे अंगार है
बुझ गया तो राख का एक ढेर है

(३)

तू खुद अपने पाँवों को हिम्मत का बल दे
उठा अपना सर और आगे को चल दे
कहाँ पूछता फिर रहा अपनी 'ज्योतिष'
ग्रहों का जो डर तो ग्रहों को बदल दे

---

१७ सितम्बर, १९१७ को बीकानेर में जन्म। अनेक चलचित्रों के सफल गीतकार। हिन्दी भक्त थे। फिल्मी गीतों में हिन्दी के शब्दों का अधिकाधिक प्रयोग, आपकी विशेषता थी। आपने फिल्म जगत को कई अमर गीत दिए।

दोहे

● मधुप शर्मा

बदल गए सब आँकड़े बदल गए दिन-रात
बहना भूली राखड़ी औ' भैय्या सौगात

करी शहर में नौकरी रामू बन गया साब
भूल गया अमराइयाँ भूल गया तालाब

नेतागिरी अफ़सरी ये तो नाम कराय
रिश्वत और धोखाधड़ी बने मुख्य व्यवसाय

राजनीति में चल रहा आज यही इक खेल
उसके हाथों ऊँट है इसके हाथ नकेल

चंबल घाटी सा हुआ सचिवालय बदनाम
घोटालों पर कर रहे मंत्री गण अभिमान

मधुप शर्मा आकाशवाणी से सेवा-निवृत्त कवि कथाकार, उपन्यासकार एवं अभिनेता थे। उनके १० काव्य संग्रह, ४ उपन्यास और कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं। उन्होंने २ अंग्रेज़ी पुस्तकों का अनुवाद किया था। उन्होंने प्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री मीना कुमारी के आख़िरी दिनों के संस्मरण 'आखिरी ढाई दिन' भी लिखा था।

ग़ज़ल

● मरयम ग़ज़ाला

भूख, ग़रीबी, बेरोज़गारी है
जाने कैसी लाचारी है

बीमारी यह सरकारी है
भ्रष्ट सभी सत्ताधारी है

टीन के इन छप्पर के नीचे
साँसें लेना आज़ादी है

एक भिखारन सुर आलापे
राग ये शायद दरबारी है

हेल्मेट सर पर लेकर चलिए
संसद में मारा मारी है

असली चेहरा कोई न जाने
हर कोई बुरका धारी है

ध्यान ग़ज़ाला की बातों पर
मत दो वह तो दीवानी है

हिंदी-उर्दू में समान अधिकार रखने वाली मरयम ग़ज़ाला के कई ग़ज़ल संग्रह प्रकाशित हुए।

ग़ज़ल

● महीपाल ●

प्यार का दीप किसी राधा ने बाला होगा
दूर मीरा पे गया जिसका उजाला होगा

वो महल की हो कथा या व्यथा कुटिया की
उन्हीं जल-थल हुई आँखों का हवाला होगा

तूने कैसे ऐ मुसम्मात फटे आँचल में
दूध और दर्द का सैलाब सँभाला होगा

फट गया होगा हिमालय का कलेजा घुट के
तब किसी हूक ने गंगा को निकाला होगा

बुत की पायल तो हसीं तूने तराशी बुततराश
उसमें बजने का गुमाँ किस तरह डाला होगा

चाँद का सौदा किया घर में अमावस कर ली
दोस्त, क्या काँच के टुकड़ों से उजाला होगा

सुप्रसिद्ध अभिनेता, 'नवरंग' आदि वी. शांताराम की कई फिल्मों के नायक महीपाल का जन्म २४ नवंबर १९१९ को जोधपुर (राजस्थान) में हुआ था। उनकी मातृभाषा हिन्दी (मारवाड़ी) थी। फूल आपके लिए (ग़ज़ल संग्रह), दिल चुन ले अपनी सौगात (ग़ज़ल संग्रह) उनकी प्रकाशित कृतियाँ हैं।

कविता

• महेंद्र कार्तिकेय

बेचैन समुद्र

समुद्र में पाँव रख कर हो सकते हैं खड़े
बैठ नहीं सकते
नदी के घाट सा
देख नहीं सकते प्रवाह नदी का
लहरों की क्रमबद्धता से टूटता नहीं शोर क्रम
लकीरें खींचने से रह नहीं पाता निशान
समुद्र की धार पर
समुद्र की इतनी बेचैनी
खारापन
चाँद के साथ
पाँव दर पाँव चलना
और इस किनारे से उस किनारे तक देखना
कहाँ होता है यह
नदी तो नहीं है समुद्र
आर पार दिख सके
नीले आकाशों के बुर्जों पर चढ़कर
देख सके तो देख
चारों और समुद्र
हर तट पर लगातार कर रहा चोटें
है लगातार बेचैन
कवि की-सृजनात्मक आत्मा की तरह बेचैन

महेंद्र कार्तिकेय मझगाँव डाक के राजभाषा विभाग से सेवानिवृत्त हुए। उन्होंने अनेक विधाओं में अपनी लेखनी चलाई फिर भी उनकी पहचान एक कवि के रूप में ही थी। इनकी लगभग २८ कृतियाँ प्रकाशित हुईं। कार्तिकेय जी को विश्व हिंदी सम्मेलनों के द्वारा विदेशों में हिंदी प्रचार-प्रसार का भी श्रेय जाता है।

कविता

• मालिनी बिसेन

सच कहती हूँ भवानी भाई

जन-जन की पीड़ा
मन-मन की बातें
श्रमिकों के दिन, सेठों की रातें
ढल जाते थे, तुम्हारी कविताओं में
दुनिया भर के रिश्ते-नाते
सारे काँटे जीवन के
बीने भींगी पलकों से
अविरत तुम लिखते रहे
औरों से अलग दिखते रहे
कविताओं को नव आकाश दिया
पवन और प्रकाश दिया
घर-घर घूमी तब कविताएँ
घर-घर का संताप समेटा
शब्दों से छलकी हुई वेदना
लिपटी देखी मुस्कानों में
गलियों, सड़कों के गीतों के स्वर
गूँज उठे भारत के हर अंचल में
इन्सानियत पथ के राही
राष्ट्रपिता के अनुयायी
गीत मोल लो टेर लगाते
भारत भू के विषपायी
गीतों में हर कृति में
इतनी भावों की गहराई
थाह न पावे मन नाविक
कैसे तुम्हारी हो सके भरपाई
हे जन-जन के जीवन गायक
हे मन-मन के मोहक नायक
हे माँ वाणी के सुत लायक
जीवन दृष्टि तुम्ही से पाई
सच कहती हूँ भवानी भाई

कवयित्री मालिनी बिसेन का जन्म इंदौर मध्य प्रदेश में हुआ था। ये कवि अंगद सिंह बिसेन की धर्मपत्नी थीं।

कविता

• मुरारीप्रसाद 'मधुप'

रहे चरण चलते युग के फिर भी मंज़िल दूर रही

रहे चरण चलते युग के
फिर भी मंज़िल दूर रही
जली वर्तिका अनेकों जीवन की
युग को देती रही प्रकाश
मानव ने काटे बंधन थे
मानवता को देने नव-विकास
मुक्ति का बिगुल बजा था
फिर भी हृदय-वीणा विकल रही
कितने जलवे व जौहर देखे
कितनी रक्त से चुनी मीनारें
कितनों ने बेटे जलवाए
कितने झुलसे यौवन बेचारे
रक्तदान दे ताज लिया था
अब भी रक्त पिपासा प्रबल रही
विष वमन करता मानव
स्वार्थों के प्रबल वेगों में
आँधी-सा चलता अणु युग
मदलिप्सा अर्थ चक्रों में
शांतिदूत कितने ही आए
फिर भी दमन लिप्सा बनी रही
शासक जनता का एक हृदय हो
क्या बाँध सकेगा सूत्र प्रबल
पूँजीवादी मज़दूरों की बाहों में
क्या रंग पाएगा रूप धवल
जनता के सेवक कहलाते नेता
फिर भी सत्तालिप्सा बनी रही
चंद्रलोक जाने से पहल
मानव मानव से मिल लेता
मानवता का बाँध बाँध
स्नेह अमिय को पी लेता
गौतम बापू की वाणी गूँजी
फिर भी कानों में तान अलग रही
युग चेतना अमर बन जाए
प्राणों में संस्कृति रव गूँजे
स्वतंत्रता का पथ ज्योतिर्मय
प्राची अरुण दीप जले
जीवन बिहसें हँस दे अग-जग
मानव-मन की चिर पुकार रही
रहे चरण चलते युग के
फिर भी मंजिल दूर रही

---

९ नवम्बर, १९३६ को लक्ष्मणगढ़ (सीकर) राजस्थान में जन्मे मुरारी प्रसाद 'मधुप' ने राजपूताना विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त की थी। हिन्दू आर्य सेवा संघ, दिल्ली से धर्म-विशारद। साहित्य सम्मेलन, प्रयाग से साहित्य-रत्न। हमारा हिन्दुस्तान, मरुधरा, जनगण आदि साप्ताहिक पत्रों के प्रतिनिधि। फोटोग्राफी में रुचि।

कविता

● मोतीलाल मिश्र

उसकी इच्छा सर्वोपरि है

प्यार मुहब्बत भाईचारा
बने मनुज का नारा
मिटे दूरियाँ दुनिया भर की
अन्तस् हो उजियारा
अमन चैन की बात करें हम
जग का रूप सँवारें
जुल्म जंग की आग बुझाकर
भू पर स्वर्ग उतारें
मेहनत की रोटी मीठी होती है
मुफ्त माल मत खाओ
जियो और जीने दो सबको
मत धरती को नरक बनाओ
खोटी नीयत लोभ में पागल
सीमाओं से बाहर निकलो
तुम्हें गर्व है अपने बल का
इस विचार को अभी बदल लो
शक्ति नहीं कम शक्तिमान की
सपनों में मत खोना
उसकी इच्छा सर्वोपरि है
वह चाहे सो होना
अभी सुनामी देखा तुमने
फिर भी भरी खुमारी
पाप न अपना देख रहे तुम
जुल्म आज भी जारी
सावधान संदेश समय का
छोड़ो अब मक्कारी
कहीं तुम्हारी ग़लत नीति से
मिटे न दुनिया सारी

मोतीलाल मिश्र कवि और हिंदी प्रेमी थे।

मुक्तक

● मोहनलाल गुप्ता

आकांक्षा

(१)

हे माँ! मानव है भूल चुका
मानवता की परिभाषा को
आशामय होने के बदले
है पकड़े घोर निराशा को
चाहे कुछ भी हो अब मुझको
आशा का दीप जलाना है
तव चरणों का अमृत पीकर
करना है शान्त पिपासा को

(२)

दिव्यता दे माँ मुझे मैं गगन का तारा बनूँ
राष्ट्र-हित जीऊँ-मरूँ मैं धवल-ध्रुव तारा बनूँ
मैं नहीं अन्याय-अत्याचार के आगे झुकूँ
हो न कोई अशुभ मेरा विश्व का प्यारा बनूँ

(३)

चापलूसी कभी कोई कवि किसी की क्यों करे
शारदा का पुत्र रहकर ही सदा जीया करे
चार दिन जीना जगत में स्वाभिमानी बन जियें
काल दस्तक द्वार पर दे जब शान से ही वो मरे

श्री मोहनलाल गुप्ता आयुर्वेद के डॉक्टर थे। कविता में उनकी विशेष रुचि थी।

गीत

• रमेश दुबे 'नादान'

वतन की पुकार

सिर कटाने वो चले जिसे वतन से प्यार है
ये वक्त की पुकार है वतन की ये पुकार है

चलो जवानों आज तुम बना के टोलियां
दुश्मनों के खून से मनाने होलियाँ
टूट पड़ो दुश्मनों पर बनके बिजलियाँ
एक भी न बाकी रहे ज़ुल्म का निशाँ
माँ भारती तुम्हारे लिए कितनी बेकरार है
ये वक्त की पुकार है वतन की ये पुकार है

उठे जो तुम पर आँख तुम वो आँख फोड़ दो
उठे जो तुम पर हाथ तुम उसे मरोड़ दो
दहाने उनकी तोप के उन्हीं पर मोड़ दो
बढ़ो कि दुश्मनों का तुम गरूर तोड़ दो
बढ़े क़दम तो जीत है रुके कदम तो हार है
ये वक्त की पुकार है वतन की ये पुकार है

मरना है एक बार तो किस बात का डर है
जो हो गये शहीद उनका नाम अमर है
इतिहास के पन्नों में सदा उनका ज़िकर है
ऐसे ही लाड़लों से ऊँचा देश का सिर है

सरहदों पर देश की तुम्हारा इन्तज़ार है
ये वक्त की पुकार है वतन की ये पुकार है

कवि, गीतकार रमेश दुबे ने फिल्मों के लिए भी गीत लिखे थे और कई साहित्यिक-सामाजिक संस्थाओं से सम्बंध।

कविता

• रविनाथ सिंह

कभी-कभी

कभी-कभी हो जाता है ऐसा
जंगल में आग लग जाती है?
चटक कर टूटे हुए पत्थर
जले ठूँठ और कलौंस के दाग
उसे बदशक्ल कर देते हैं।
कभी-कभी हो जाता है ऐसा
नदी में बाढ़ आ जाती है
कगार टूटने लगते हैं
भरी-पूरी आबादी
श्मशान में बदल जाती है।
कभी-कभी हो जाता है ऐसा
अकाल पड़ जाता है
दरकने लगती है धरती
बादल खिलवाड़ करते हुए
आ-आकर लौट जाते हैं।
कोई नयी बात नहीं है यह
पहले भी हुआ है ऐसा
मगर न धरती के चेहरे पर
शिकन देखी है
और न आकाश के माथे पर
बल पड़े हैं
जंगल फिर हरा होता है
फसलें फिर लहलहाती हैं
आदमी फिर सपने देखता है
उम्मीदें फिर चहचहाती हैं।

डॉ. रविनाथ सिंह एस.आई.ई.एस. महाविद्यालय, सायन में हिंदी विभागाध्यक्ष तथा हिंदी के प्रतिष्ठित आलोचक एवं कवि थे।
'पंख कटा मेघदूत', 'काई ढंके शिलाखंड' 'मेरे मन साँझ हुई' इनके कविता संग्रह हैं।

गीत

• रामचंद्र पाण्डे श्रमिक

अपनापन वर्षों से बीमार है

मैं प्रकाश की गरिमा को पहचान सका
अंधकार का मुझ पर यह उपकार है
और सत्य के निकट छोड़ कर गया मुझे
झूठ मेरे घर आया जितनी बार है
कैसे होता मंद समीर का अनुभव
अगर न होता मौसम झंझावात का
रोज-रोज आ आकर मन-भावन सपने
हमें अर्थ बतला जाते हैं रात का
पतझर में जब झर जाते हैं पात सभी
लहराती-सी आती तभी बहार है
सोच रहा हूँ भूख न होती दुनिया में
तो फिर इस रोटी का मतलब क्या होता
मानव तब खेतों में गेहूँ के बदले
सचमुच क्या चाँदी बोता, सोना बोता
उस समाज में भी क्या ऐसा ही होता
आज हो रहा जैसा कारोबार है
तुम अपने सच में थोड़ा झूठ मिला करके
देखो दुनिया के अंदर कैसा लगता है
सब अनायास मालूम तुम्हें हो जाएगा
आदमी कहाँ किस-किस को कैसे ठगता है
संबंधों में अपनेपन का अहसास कहाँ
अपनापन बरसों से बीमार है

रामचंद्र पाण्डेय 'श्रमिक' की शिक्षा-दीक्षा दुनिया के विद्यालय में हुई पर वे जन्मजात कवि थे। फुटपाथ पर पुरानी पुस्तकों का व्यवसाय। प्रकाशित काव्य संग्रह 'एक अपना भी घर हो'। इनकी स्मृति में श्री राधेश्याम उपाध्याय के संपादन में 'जारी है संघर्ष' नाम से स्मृति ग्रंथ भी प्रकाशित।

कविता

● राजीव सारस्वत

ऑफ़ हो जाना

महानगर में आदमी मशीन
मशीन हो जाता है
चलता है, दौड़ता है
भागता है, फिरता है
खोजता है, खो जाता है
रुकता है, गिरता है
थमता है, उठता है
फिर नई कोशिश में
जुट जाता है
जब जीवन की आपाधापी से
थक कर चूर
निढाल हो जाता है
तब ठहर जाता है
मरता नहीं है
ऑफ़ हो जाता है

---

३ नवंबर १९५८ को मुरादाबाद (उ.प्र.) में जन्मे और २६ नवम्बर २००८ को मुम्बई में हुए आतंकवादी हमले में सरकारी दायित्व निभाते हुए होटल ताज में शहीद हुए सुप्रसिद्ध कवि, लेखक एवं हिंदुस्तान पेट्रोलियम कार्पोरेशन में कार्यरत प्रबंधक (राजभाषा-कार्यान्वयन) राजीव सारस्वत एक कुशल रंगकर्मी थे। 'मेरा नमन' काव्य संग्रह प्रकाशित।

कविता

● रामपदारथ पाण्डेय

अलविदा

ताने मुट्ठियों को
अलविदा लो साथी
अमन, खुशहाली, तरक्की
और जनता की हलचल का
परचम लो साथी
पीछे हटे न कदम
कभी झुके न ये परचम
ऊँचा हो मन
जितनी ऊँची हों दीवारें
लिए जनता की हलचल
फिर मिलेंगे हम साथी
ताने मुट्ठियों को
अलविदा लो साथी

मार्क्सवादी विचारधारा के पोषक रामपदारथजी ने आपातकाल में जेल यात्रा भी की थी। बम्बई की पुरानी यातायात व्यवस्था ट्राम में वे कंडक्टर थे। 'नया पथ' और 'जनसंग्राम' पत्रिका के प्रकाशक और वितरक पाण्डेय जी की 'माटी और चट्टान', 'पुरानी बम्बई की सड़क-यात्रा', 'मैट्रो में टिकट कलेक्टर' कृतियाँ प्रकाशित हुई थीं। वे 'महाराष्ट्र के भाषा आंदोलन' में भी सहभागी रहे।

गीत

● डॉ.राममनोहर त्रिपाठी

तकलीफों के बाद तनिक आराम है
तुम कहते हो गीतों से क्या काम है
गीतों का बादल मुझको नहलाता है
स्वर का गुंजन घावों को सहलाता है
यह हर दु:ख में मेरा मन बहलाता है
मेरा जीना ही इस का परिणाम है
तुम कहते हो गीतों से क्या काम हैं
यही सोचकर तुम को भी हैरानी है
जो दुखियारा है मेरा पहचानी है
सब से परिचित मेरी राम कहानी है
मेरे लिए यही पैसा है दाम है
तुम कहते हो गीतों से क्या काम है
भावुकता के वेश हजारों धरता हूँ
मधुऋतु-सा खिलकर पतझर-सा झरता हूँ
ध्यान लगाकर स्वर की पूजा करता हूँ
गीतों के मंदिर में मेरा राम है
तुम कहते हो गीतों से क्या काम हैं

महाराष्ट्र हिंदी साहित्य अकादमी के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. राममनोहर त्रिपाठीजी का जन्म २५, जनवरी, १९३२ को रायबरेली (उ.प्र.) में हुआ था। महाराष्ट्र शासन द्वारा 'जस्टिस ऑफ पीस' की उपाधि से उन्हें सम्मानित किया गया था। त्रिपाठीजी महाराष्ट्र सरकार में मंत्री भी रहे। १९५५ से बम्बई में नगर के सामाजिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक जीवन से संपृक्त त्रिपाठी जी पत्रकार भी थे। 'गीत के ये हंस', 'साँप हँसे', 'कीचड़ सने पाँव फर्श पर'(गीत संग्रह) वंश वृक्ष की टहनियाँ, अपरिचय के विंध्याचल, सेतु, (निबंध संग्रह) वीर बैंसवाड़ा (खंड काव्य) रोज़नामचा (मुक्तक संग्रह) बंबई के हिंदी भाषी कामगार(अध्ययन) भारत रत्न लालबहादुर शास्त्री (जीवनी) बंबई के उत्तर भारतीय (लेख) इनकी प्रकाशित कृतियाँ हैं।

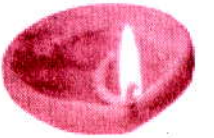

मुक्तक

● रामरिख 'मनहर'

अधर अधखुले, नयन अधमुँदे, लरजे लाल कपोल
इस पर भी कुछ कमी लगी तो बोल दिए कुछ बोल
औरों पर क्या बीतेगी, यह तुमने कभी न सोचा
कई बार मुड़-मुड़कर देखा आधा घूँघट खोल

•

मन गया है यों उचट ज्यों अनलिपा-सा ठाँव हो
प्यार का परिचय झुलसती दुपहरी की छाँव हो
वेदना कुछ यों विरह की एक धुँधली शाम-सी
जिन्दगी कुछ यों कि ज्यों बेटी पराये गाँव हो

•

कुसुम-काया कनक-सी पाँखरी की लाज खोती है
महक से बावली माटी बहुत यों आज होती है
नयन उन्माद से तंद्रिल, अधर मुस्कान से बोझिल
ज़रा धीमे चलो ऐसे बहुत आवाज़ होती है

•

सुख में दुख में यों अन्तर होता है
दुख का क्षण-क्षण मन्वंतर होता है
कह देने से दुख थोड़ा-सा घटता
सह लेने से छूमन्तर होता है

भारत भर में प्रसिद्ध काव्य मंचों के सफल संचालक रामरिखजी ने साहित्य वार्षिकी 'मंगल दीप' का प्रकाशन संपादन किया था।

कविता

● रामसागर पाण्डे

मन करता है....

मन करता है
लीक से हटकर चलूँ
नोच लूँ मुखौटा
करूँ साक्षात्कार
सत्य का
जो है
मेरे आस-पास
मेरे घर से
वातानुकूलित कमरों तक
जिसका है विस्तार
मन करता है
लीक से हटकर चलूँ
रोप दूँ
धरती की कोख में
एकलव्य के अंगूठे का खून
द्रोण की रणनीति के विरुद्ध
एक और युद्ध छेड़ दूँ
मन करता है
लीक से हटकर चलूँ
कर दूँ अंकित
लहू-लुहान संसद के
माथे पर
'तू है रखैल धन्नासेठों की'
फोड़ दूँ अहिंसा का
एक-एक बुत
बढ़े नाखूनों में
विष घोल दूँ
मन करता है
लीक से हटकर चलूँ
रामायण की चौपाइयों
में पिये राम को
खड़ा कर दूँ
राशन की क्यू में
मिटा दूँ बच्चे की स्लेट से,
'हे प्रभो आनंददाता'

मार्क्सवादी चिंतक कवि, लेखक और पेशे से प्राध्यापक रामसागर जी अपनी मृत्यु से पूर्व मिल कामगारों के जीवन पर आधारित एक उपन्यास लिख रहे थे। 'उन हाथों को सलाम' उनकी प्रकाशित कृति है।

कविता

● रामावतार चेतन

वस्तु-सत्य

भूख सता जाती है तुमको
प्यास सता जाती है तुमको
नींद सता जाती है तुमको
इन सबका अस्तित्व
तुम्हारे आगे भी उतना ही सच है
जितना और किसी के आगे
यही नहीं, ममता के धागे
ग्लानि, जुगुप्सा, खीझ, रोष के ताने-बाने
तुमसे भी हैं उतने ही जाने-पहचाने
जो कि समय-असमय अनजाने
भंग कर दिया करते प्रायः 'मूड' तुम्हारा
तुम अपनी एकान्त साधना
तुम अपनी चिन्तन की धारा
इन सबसे तो नहीं अछूती रख सकते हो
इनसे भाग नहीं सकते हो
इनको दूर कभी कैसे भी
हटा नहीं सकते अपने से
मिटा नहीं सकते अपने से
इसलिये तो कहता हूँ
तुम
सबसे पहले मानव हो
फिर कलाकार, साहित्यकार हो

हिंदी से एम. ए. और पेंटिंग में डिप्लोमा की उपाधि प्राप्त रामावतार चेतन महर्षि दयानंद कॉलेज, बम्बई में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष थे। वे 'रंग' हास्य-व्यंग का मासिक एवं 'आधार' ललित-कला त्रैमासिक के संचालक-संपादक थे। सुरुचिपूर्ण वार्षिक कवि सम्मेलन के सफल आयोजक रामावतारजी की 'श्वासों के स्वर','चाँद से नीचे','धरती की महक' आदि प्रकाशित कृतियाँ हैं।

गीत

• लालमणि शुक्ल 'आलोक'

अभियान-गीत

आगे पैर बढ़ाओ,
साथी! आगे पैर बढ़ाओ

धोए हुए नयन आँसू से रजनी का प्रस्थान
दिनकर झाँक रहे प्राची से मुख पर ले मुस्कान
दबे हुए जो बीज धरा के कुछ तो भास कराओ
आगे पैर बढ़ाओ
साथी! आगे पैर बढ़ाओ

फूट रही हैं किरणें रवि से ले उज्ज्वल इतिहास
दूर हटा अँधेरा, तो क्यों तू है बना निराश
तिमिर-नाश, आलोक-सृजन पर मंगल गान सुनाओ
आगे पैर बढ़ाओ
साथी! आगे पैर बढ़ाओ

भारत माँ के हर कोने से वक्ष भरा आशीष
निकल रहा है, बंधु! झुका लें आओ अपना सीस
श्रम की पूजा होगी, साँपों को विषहीन बनाओ
आगे पैर बढ़ाओ
साथी! आगे पैर बढ़ाओ

कवि लालमणि शुक्ल डाक विभाग में कार्यरत थे। 'दबी आग' उनकी प्रकाशित पुस्तक है।

गीत

● लोचन सक्सेना

है देश हमारा

है देश हमारा, जरा सोचो दिमाग से
घर को लगाओ आग न घर के चिराग से

गीता, कुरान, बाइबिल, गुरु-ग्रंथ में लिखा
इंसान वही, साथ जो इंसानियत रखा
पूजा, अजान, प्रार्थना, या बोल सबद के
कहते हैं, सभी धर्म को समान अदब दे
खुद को बचाइयेगा, नफ़रत की आग से

खुशबू चमन में फूल से, काँटों से नहीं है
काँटे न चुभेंगे जहाँ, सुख-चैन वहीं है
काँटा अगर चुभेगा, तो दर्द ही होगा
माँ भारती के मन का सुख चैन हरेगा
आजादी मिली हमको सपूतों के त्याग से

जब देश था गुलाम तो हम एकता रखे
ग़ैरों के सभी जुल्म एक साथ हम सहे
आपस में आज फूट भला किसलिए पड़ी
सारे ही देश को है, शर्मिंदगी बड़ी
काँटे भी बैर 'लोचन' रखते न बाग से

पश्चिमी उत्तर प्रदेश, अलीगढ़ में जन्मे लोचन सक्सेना स्वभाव से कवि थे। 'लोचन कला अकादमी' के अंतर्गत कई भजन एलबमों का निर्माण। प्रकाशित काव्य संग्रह- सीपियाँ(ग़ज़ल संग्रह), गहराइयाँ, मुक्तकी, हम हैं हिंदुस्तानी, भजनावली एवं भजनमाला।

नवगीत

● पंडित वसंत देव

बूँद झरी

बूँद झरी
बूँद झरी

अंबर से बूँद झरी
आँक गया कोई मेरे माथे पै बिंदुली सुनहरी
उग आई रोम-रोम फुलझड़ियाँ गुल्मुहरी
बूँद झरी

भौंहों से छूटी तो अटक गई पलकों में
आँज गई बिजुरी की चमक नई आँखों में
गालों पर रेशम की लहरी
बूँद झरी

लपटों का मेला है कर्पूरी मेरा तन
अँधियाली-साँसों की गन्धरवी तड़पन
अँजुरी की पीर बहुत गहरी
बूँद झरी

टेह रहा घन-मृदंग, पायल पर चढ़ा रंग
पावस की बाँहों ने घेर लिया अंग-अंग
काया के तार तने, बैन गए छोड़ संग
अधरों की अधरों से ठहरी
बूँद झरी

मूलत: मराठी भाषी कवि वसंत देव विलेपार्ले मुंबई के पार्ले कॉलेज में प्राध्यापक के तौर पर कार्यरत रहे। उन्होंने फिल्म एवं धारावाहिकों के लिए भी लेखन किया। उत्सव फिल्म के उनके गीत बेहद लोकप्रिय हुए।

मुक्तक

● विजयवीर त्यागी

अपने मायूस इरादों को जगाया होता
इन अभावों का ये घूँघट तो उठाया होता
ओ! अँधेरो को बुरा कह कर बहकने वाले
इस! अमावस में कोई दीप जलाया होता

रूप, अभिसार को छल जाए, ज़रूरी तो नहीं
हर खुशी हास में ढल जाए, ज़रूरी तो नहीं
छिप के शम्मा से भी कुछ जलते हैं जलने वाले
हर शलभ दीप पै जल जाए, ज़रूरी तो नहीं

रूप की आँच से संयम भी पिघल सकता है
गीत की गन्ध से मौसम भी बदल सकता है
प्यार के नेह से यौवन ने जलाया हो जिसे
ऐसा हर दीप अमावस को निगल सकता है

हिंदी काव्य मंचों के सफल संचालक, कवि और अध्यापक श्री विजयवीर त्यागी का 'सरगम तुम्हारा है' नाम से काव्य संग्रह प्रकाशित है।

कविता

• डॉ. विनय

मैं कहीं भी नहीं आता

मैं कहीं भी नहीं आता
फिर भी अतीत और वर्तमान के रास्तों पर
अंकित
अपने पदचिह्न देखकर
यही लगता है कि मैं
केवल तुम तक गया हूँ

तुम एक देवालय हो अपने में सौरभ लपेटे
एक घर हो प्रशांत अनुभवों की समृद्धि में
एक तीर्थ हो मंत्रोच्चार के साथ वरदान देते हुए
एक उपवन हो ऋतुओं के स्वागत में खिलते
मुस्कराते
शायद एक गवाक्ष भी
जहाँ से प्रकाश की किरणें जीवन लाती हैं
मन की तरंगों पर
समुद्र का विस्तार और पर्वत की ऊँचाई
एक साथ सबकुछ हो

इसलिए जब-जब मैंने कुछ भी चाहा
पूजा, फूल, दीवार, हँसी, प्रकाश
तब तब मैं तुम तक गया हूँ
अब कैसे कहूँ कि
मैं कहीं भी नहीं जाता

---

२ अप्रैल १९३७ को हरिद्वार में जन्मे डॉ. विनय दिल्ली विश्वविद्यालय में अध्यापक थे। अनेक वर्षों तक दिल्ली रहने के बाद मुंबई आ गये। दो दर्जन से अधिक कविता संग्रह, नाटक और आलोचना पर पुस्तकों के साथ ही उन्होंने कई वर्षों तक 'दीर्घा' नामक पत्रिका के सम्पादन भार को संभाला।

कविता

• डॉ. विनोद गोदरे

नादान दोस्त से

तुम देते नहीं हो गेहूँ
समझते हो
यह भुखमरा देश तुम्हारे सामने घिघिआएगा
तुम देते नहीं हो शस्त्र
समझते हो
शान्ति का देश यह
दुनिया की नज़रों मे बुजदिल कहलाएगा
और आर्थिक अभियानों से खींच लेते हो हाथ
सोचते हो कि भारत टेक देगा माथ
तुम भूल गए कि यह कौटिल्य की धरती है
जो कुश की जगह अभिमानी का राज्य उखाड़ता है
और जहाँ का वृद्ध पोरस
वितस्ता के तट पर सिकदर को पछाड़ता है
मेरे नादान दोस्त
यह देश पराए अनाज, पराए अर्थ और
उधार शस्त्रों पर नहीं जीता
और कभी भी
तन की व्यवस्था के नाम पर
मन के रिसते घावों को नहीं सीता
वह ख़ुद की जायी आत्मशक्ति लेकर आगे बढ़ता है
क्या तुम भूल गए कि
कुरुक्षेत्र में, बिना कवच और
कुण्डल के भी कर्ण लड़ता है

डॉ. गोदरे ने एम.ए., पी-एच.डी. तक की पढ़ाई की थी। के. सी. कॉलेज, मुंबई के हिन्दी विभाग तथा मुंबई विश्वविद्यालय में प्राध्यापक थे। इन्होंने 'चारूदत्तम्' का हिन्दी अनुवाद किया और उनका एक कविता संग्रह 'दरबार बर्खास्त करते हुए' भी प्रकाशित है।

कविता

• वीरेंद्रकुमार जैन

वह तुम ही हो

दूर-पास की इन सुनसान छतों पर
जो कहीं कोई नहीं है
वह तुम ही हो
इस विस्तृत वीरान उद्यान के सन्नाटे में
उस छोटे से रेलिंग पर एकाकी झूलती
बनफ़्शई फूलों की लतर से
एक फूल झुमका तोड़ कर
जो कोई भी अपने जूड़ें में नहीं टाँक लेती
वह तुम ही हो
दूर जुहू की उन नारियल-वन-मालाओं
के अन्तरालों में छाई
सागर की जलाभा में
जो अभी-अभी कोई नहीं गुज़रा
वह तुम ही हो
मर्मराते जंगल के हरियाले रुधिर में
कसकती
चाह के उत्तर में
इस वनान्तर में आज तीसरे पहर
जो कोई नहीं आया
वह तुम ही हो
अनाघ्रात वन की
इस विजनवती नदिया के तीर
तट पर वसन छोड़
धूपाविल लहरों में जो कोई अनंगिनी
नहीं डूबी उतरायी
केवल वनान्तर में काँप कर रह गई
कहीं कोई एक परछाई
वह तुम ही हो
सृष्टि के छोर पर
अगम नील शून्य की तरंगों में
मेरे भीतर जन्मान्तरों से कसक रहा
जो कोई चेहरा
अभी मनचीता आकार नही ले पाया
वह तुम ही हो

प्रसिद्ध कवि, लेखक वीरेंद्रकुमार की भगवान महावीर पर आधारित अनुत्तर योगी तीर्थंकर महावीर(उपन्यास, चार खण्डों में) मुक्तिदूत (पौराणिक उपन्यास)बिम्ब-प्रतिबिम्ब, प्रकाश की खोज(निबंध संग्रह) शून्य पुरुष और वस्तुएँ, अनागता की आँखें, यातना का सूर्य (कविता संग्रह) एक और नीलांजना, आत्मपरिणय, शेषदान (कहानी संग्रह) कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं।

नवगीत

• वीरेद्र मिश्र

रह गया सब कुछ बिखर कर
इन दिनों है दुख शिखर पर
एक पल में हो गया
सब कुछ अधूरा
कुछ हुआ ऐसा कि
टूटा तानपूरा
शब्द का संगीत चुप है
काँपता हर गीत थर-थर
और ऊपर उठ रही है
तेज धारा
यह किसी रूठी नदी का
है इशारा
द्वीप जैसा हो गया है
बाढ़ में घिरता हुआ घर
देखने में नहीं लगता
साधुओं सा
दुख शलाका पुरुष-सा है
आँसुओं का
रहा आँखों में बहुत दिन
आज है
लम्बे सफ़र पर

नवगीत के प्रणेता वीरेंद्र मिश्र हिंदी काव्य मंच की शान थे। उन्होंने बीस से अधिक कृतियों का सृजन किया।

गीत

• शिवशंकर वशिष्ठ

क्रान्ति पथ

मैं चला क्रान्ति के नव पथ पर
मैं चला क्रान्ति के नव पथ पर
मैंने यौवन बिकते देखा गलियों में औ' बाजारों में
मैंने मानवता को देखा नत चाँदी की मीनारों में
मज़हब के दीवाने देखे आपस में लड़ते कट मरते
मस्जिद के हामी अल्लाहो, मन्दिरवाले हर-हर करते
देवालय की प्रतिमाओं में भूखा नंगा मानव देखा
मस्जिद के साये में बैठे नर कंकालों का दल देखा
एक चाह लिये, एक आह लिए, नयनों से झरता था निर्झर
मैं चला क्रान्ति के नव पथ पर
मैं चला क्रान्ति के नव पथ पर
निर्धन नारी की सुन्दरता अभिशापित होते भी देखी
भोली ललनाओं की चोली अंगारों में जलते देखी
जन पद कल्याणी को देखा एक हूक लिए, शृंगार किए
तन में समाज का कोढ़ भरे, मानस में मधुर दुलार लिए
मजदूर किसानों को देखा पूँजी के शोषण में पिसते
अपने जीवन की बाजी को नाकामी में ढँकते-रिसते
युग संघर्षों की छाया में बढ़ता जाता प्रति-दिन सत्वर
मैं चला क्रान्ति के नव पथ पर
मैं चला क्रान्ति के नव पथ पर

शिवशंकर वशिष्ठ जी का जन्म उत्तर प्रदेश की मण्डी चन्दौसी (जिला- मुरादाबाद) में हुआ था। उनकी शिक्षा एस.एस. कॉलेज चन्दौसी, देहली एवं पंजाब विश्वविद्यालय में हुई। उनकी प्रकाशित कृतियाँ हैं– 'प्रत्यूष','गीली आँखे गीले गीत' तथा 'महाराष्ट्र के लोकप्रिय हिन्दी स्वर'(काव्य-संग्रह)। दस वर्ष तक उन्होंने अध्यापन का कार्य किया। वे 'समन्वय'(साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक) संस्था के संचालक भी थे।

ग़ज़ल

• शैल चतुर्वेदी

अपनी अपनी कारस्तानी
कहना सुनना है बेमानी

मुखड़ा मुखड़ा एक मुखौटा
आखर आखर गलत बयानी

मदिरा मदिरा घूँट किसी को
कोई पुकारे पानी पानी

रो कर पूछा देश कहाँ है
हँस कर बोले हम का जानी

हँसी बाँटते जीवन बीता
हमसे कौन बड़ा है दानी

शब्द शब्द से अर्थ निकाला
अर्थ मिला तो अक्ल हिरानी

परिचय 'शैल' हमारा इतना
उमर सयानी पीर पुरानी

शैल जी की पहचान एक प्रसिद्ध हास्य व्यंग्य कवि के रूप में है। उन्होंने कई फिल्मों में हास्य भूमिकाएँ भी कीं।

गीत

● शैलेंद्र

तू ज़िंदा है तो

तू ज़िंदा है तो ज़िन्दगी की जीत में यकीन कर
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर

ये ग़म के और चार दिन, सितम के और चार दिन
ये दिन भी जाएँगे गुज़र, गुज़र गए हज़ार दिन
कभी तो होगी इस चमन पे भी बहार की नज़र
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर

हमारे कारवाँ को मंज़िलों का इंतज़ार है
ये आँधियों, ये बिजलियों की पीठ पर सवार है
तू आ कदम मिला के चल, चलेंगे एक साथ हम
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर

ज़मीं के पेट में पली अगन, पले हैं ज़लज़ले
टिके न टिक सकेंगे भूख रोग के स्वराज ये
मुसीबतों के सर कुचल चलेंगे एक साथ हम
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर

बुरी है आग पेट की, बुरे हैं दिल के दाग ये
न दब सकेंगे, एक दिन बनेंगे इन्कलाब ये
गिरेंगे जुल्म के महल, बनेंगे फिर नवीन घर
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर

किसी की मुस्कुराहटों पे..., सबकुछ सीखा हमने..., दोस्त दोस्त न रहा..., आज फिर जीने की तमन्ना... मेरा जूता है जापानी..., हर दिल जो प्यार करेगा... जैसे अनेकों प्रसिद्ध, लोकप्रिय गीतों के रचनाकार शैलेंद्र का जन्म ३० अगस्त, १९२३, को रावलपिंडी में हुआ था। पेशे से रेलवे में वेल्डर। बाद में प्रसिद्ध अभिनेता राजकपूर के आग्रह पर फिल्मों के लिए गीत लिखना शुरू किया। अपने मानवीय सरोकारों से जुड़े गीतों के चलते हिंदी सिनेमा जगत में उनकी अलग पहचान है।

कविता

● श्याम ज्यालामुखी

अति सर्वत्र वर्जयेत

मनुष्य ने प्रगति बेशक बहुत की
पर लक्ष्मण रेखा लाँघ गया
और प्रकृति में विकृति भी बहुत की
ज़मीन से निकाल लिया / खनिज, पानी, तेल, गैस
बड़ी की प्रोग्रेस
ज़मीन खोखली हो गई, तड़क गई
भीतरी परतें सरक गई
नतीजा-भूकंप, ज्वालामुखी, चक्रवात, सुनामी
वृक्ष काट डाले आक्सीजन की भी हो गई कमी
ए.सी. कल्चर ने बढ़ा दी इथेन मिथेन
कर दिया ओजोन छत्री में छेद
टी.वी., कम्प्युटर ने कर दिया घर में कैद
नतीजा-बीमारी, महामारी, मानव मानव में भेद
वैचारिक प्रदूषण का भी फैला आकार
नतीजा-दंगे, आगजनी, हत्या, बलात्कार
मनुष्य/पशु पक्षी/वनों का भी / हो गया असंतुलित अनुपात
नतीजा-जीव जगत पर वज्रपात
यार यह सच है-एक पेड़ से
दियासलाई की लाखों तीलियाँ बन सकती हैं
पर यह भी सच है- / एक तीली से लाखों पेड़ जल सकते हैं
मुख्य है, वस्तु का विवेक सहित उपभोग
या विवेक विहीन दुरुपयोग
भगवान श्रीकृष्ण ने गीता जी में साफ कहा है
जैसा करोगे वैसा भरोगे
अत: सृजन से नाता जोड़ें
विध्वंस से मुंह मोड़ें
मिटाये हर प्रकार का प्रदूषण
और बन जायें पर्यावरण के उद्धरण

भीलवाड़ा राजस्थान में जन्मे श्याम जी एक प्रसिद्ध हास्य कवि थे। कवि गौरव शर्मा के पिता श्री श्यामजी की मुंबई ट्रेनों में हुए सीरियल धमाके में मृत्यु हो गई थी।

गीत

• संतबख्श सिंह 'चंचल'

कहने दो

मेरे उत्साहित दृढ़ संकल्पों को
कोई कुछ कहता है तो कहने दो
चोटी से धारा नीचे बहती है
पर्वत-ठोकर की पीड़ा सहती है
पर्वत जहाँ अचल धारा तो चल है
युगल मूक सम्वाद बहुत निश्छल है
धारा को थोड़ा मुड़कर बहने दो
कोई कुछ कहता है तो कहने दो
अंगर वसन्ती हवा तुम्हें पाना है
वन-उपवन बगिया को महकाना है
भँवर माते गुंज करें फूलों पर
पंछी बिहरे नदी के तट-कूलों पर
तब पतझर को भी कुछ दिन रहने दो
कोई कुछ कहता है तो कहने दो
जिसने नहीं तपाया अपने तन को
तप कर नहीं थकाया अपने मन को
जहाँ पसीने की सरिता बहती है
सावन की हरियाली तब मिलती है
इसलिए प्राण को सब कुछ सहने दो
कोई कुछ कहता है तो कहने दो
यह काली रात गुजरने वाली है
उषा की लाली आने वाली है
पंथी के सारे पथ धुल जाएंगे
घर के दरवाजे सब खुल जाएंगे
बात रात की सूरज से कहने दो
कोई कुछ कहता है तो कहने दो

संतबख्शसिंह जी एक कवि और हिंदी प्रेमी रचनाकार के रूप में जाने जाते हैं।

नवगीत

• सच्चिदानंद सिंह 'समीर'

मोम के महल

ढह रहे हैं सारे
ताश के महल
आओ चलें खोजें
आदमी असल
आदमी
मिलावटी सामान हो गया
देशी
शराब की दुकान हो गया
कर रहे हैं आम भी
बबूल की नकल
राज
और नीति में मेल है कहाँ
सारा
कुछ पैसों का खेल है यहाँ
गल रहे हैं सारे
मोम के महल
चोर
चापलूस की चाँदी यहाँ
खादी
है उनके बचाव मे यहाँ
खिल रहे हैं रेत मे
रात को कमल

सच्चिदानंद जी एक नवगीतकार के रूप में अपनी खास पहचान रखते थे।

कविता

• सत्यप्रकाश जोशी

अनाथ की समाधि पर

यह समाधि है युग मानव की
यही बेबसी की कारा है
यहाँ मनुजता गई पछाड़ी
पौरुष यहीं थका हारा है
निर्धनता दीपक बेः झीने
उजियारे में सपने ठहरे
अरमानों बेः दीप जले हैं
विश्वासों बेः लगते पहरे
रोटी रोजी कपड़ेवाली
सबकी भिक्षा यहीं गड़ी है
बड़ी-बड़ी सरकारों की भी
यहाँ विवशता दबी पड़ी है
अन्तिम दिन तक हर दफ्तर के
चरणों में जा शीश झुकाया
धक्कों से पद विचलित जिसके
फटकारों से सिर चकराया
पर समाज से, या शासन से
जो कुछ करुणा कण ना पा सका
अगले दिन ज़िन्दा रहने को
भी न किसी का स्नेह खा सका
चौराहे की चहल-पहल में
आज दुपहरी बीच हर गया
इस शताब्दि के ठीक बीच में
पुरुष मर गया, मनुज मर गया
शव ढँक लिया किसी दानी ने
और पुलिस काग़ज़ ले आई
इज़्ज़तवाले प्रमुख नागरिक
आ आ कर दे गये गवाही
अस्पताल की सुन्दर गाड़ी
शव ले गई परख करने को
जहाँ संगमरमर की चौकी
सजी हुई है शव धरने को
आज डाक्टर बिना बुलाए
बिना फ़ीस आ जाते अन्दर
आज छू उठी उस अनाथ को
हंसिनी-सी वे नर्से सुन्दर
कफ़न, जमीं; और आग जुटाई
आज बजट से पैसे लेकर
मरघट तक जा दाग़ किया है
सरकारों ने बंधा देकर
भाग्यवान है मरनेवाला
जो मरकर इतना पा लेता
वर्ना ज़िन्दा मनुज आज का
धीरे धीरे मरता जाता
नई व्यवस्था की आँधी में
जाने सब को कौन ठग गया
हर किसान का, हर मजूर का
जैसे फिर से खून जग गया
रक्षक कोई नहीं किसी का
जन-शासन भी नहीं साथ है
अलग-अलग सब सिसक रहे हैं
सब लावारिस, सब अनाथ हैं
यों तिल-तिल मरनेवालों की
बढ़ती ही जाती जमात है
सभी ढूँढ़ते अवसर अपना
सबको अपना भाग्य ज्ञात है
तुम न मचलना इस समाधि में
तुम पर जुल्म न होने देंगे
मरने वाले बहुत खड़े हैं
तुम्हें न फिर से मरने देंगे

श्री सत्यप्रकाशजी एक कवि और हिंदी प्रेमी के रूप में जाने जाते थे।

गीत

● सरस्वतीकुमार 'दीपक'

यह मेरा अनुरागी मन

यह मेरा अनुरागी मन
रस माँगा करता कलियों से
लय माँगा करता अलियों से
संकेतों से बोल माँगता
दिशा माँगता है गलियों से
जीवन का लेकर इकतारा
फिरता बन बादल आवारा
सुख-दु:ख के तारों को छूकर
गाता है बैरागी मन
यह मेरा अनुरागी मन
कहाँ किसी से माँगा वैभव
उसके हित है सब कुछ सम्भव
सदा विवशता का विष पीकर
भर लेता झोली में अनुभव
अपनी धुन में चलने वाला
परहित पल-पल जलने वाला
बिन माँगे दे देता सब कुछ
मेरा इतना त्यागी मन
यह मेरा अनुरागी मन

इनका मूलनाम श्री रामगोपाल शर्मा था। १ जुलाई, १९१८ को मेरठ में जन्मे सरस्वतीकुमार जी ने बी.ए. तक की शिक्षा पाई थी। कवि, लेखक एवं पत्रकार सरस्वती कुमार दीपक ने कई फिल्मों में गीत-संवाद भी लिखे थे। पूरा जीवन मसिजीवी के रूप में बिताना उनकी रचना के प्रति प्रेम और विश्वास को उजागर करता है।

कविता

● डॉ. सी. एल. प्रभात

धन्य-धन्य कुत्ते मियाँ

कुत्ते मियाँ
तुम भोंकते भी हो और पूँछ भी हिलाते हो
और भाई, पता नहीं चलता कि
तुम्हारी कौन-सी अभिव्यक्ति प्रामाणिक है
बड़े नायाब अदाकार हो
हमसे भी बड़े कलाकार हो
भीतर ड्रॉइंग रूम के सोफे पर
शोभित है तुम्हारा प्यार
और बाहर सत्ता के द्वार पर
गरजती है ललकार
वाम और दक्षिण पंथ
दोनों एक साथ
बोले गंभीर वाणी में श्री कुत्ते मियाँ
भौं..., भौं..., भौऽ भौंऽऽ
मूर्खता की बात करते हो क्यों
कौन है यहाँ : दक्षिण या वाम
हर एक की वसीयत है अपने ही नाम
भागो यहाँ से
व्यंग्य मत करो हम पर
अपनी ही मातृभाषा में बोलते हैं
और जो बोलते हैं, वही कहते हैं
दिल और ज़बान बाँटते नहीं हैं
और, जिसके सामने पूँछ हिलाते हैं
उसे काटते नहीं है
मगर, जनाब आप हैं कौन
जो घूरते हैं यों
चोरों की तरह इस द्वार पर खड़े हैं
क्यो
भौं..., भौं..., भौऽ भौंऽऽ
धन्य-धन्य श्री कुत्ते मियाँ
तुम भूँकते भी हो और
दुम भी हिलाते हो
और पता नहीं चलता कि
तुम्हारी कौन-सी अभिव्यक्ति प्रामाणिक है
हम तो कवि हैं, लेखक हैं
पत्रकार हैं
राजनीति से खेलते
शब्दों के सूत्रधार हैं
पर
हमसे भी बड़े कलाकार
हो तुम
सच

डॉ. छोटेलाल प्रभात बम्बई विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष थे। वे शोध निदेशक थे और कवि कर्म में उनकी रुचि थी। उनका जन्म कासगंज उत्तर प्रदेश में हुआ था।

दोहे

● सुमन सरीन

जग में ढूँढ़ा प्रेम तो अब तक अचरज होय
कान्हा तो लाखों मिले मीरां मिली न कोय

दो पग जो ना चल सके लिये हाथ में हाथ
कहते हैं कि लो दिया जीवन भर का साथ

क्वाँरेपन के रतजगे बहकी-बहकी बात
छत पर हाय भीगना सारी सारी रात

खाकी वर्दी देखकर बौराया उन्माद
जिस दिन लौटा डाकिया सारा दिन बरबाद

पीपल के पत्ते बंदी चिट्ठी की सौगात
भौजी करे ठिठोलियां रहे लगाये गात

महुये के रस से भरे बड़े बड़े दो नैन
घुंघर वाले बाल ने लूटा दिल का चैन

होली में भिजवा दिया बैरी ने संदेश
फिर तो फागुन रूठ कर जा पहुँचा परदेश

इक कचनारी आग में तपे गुलाबी गाल
किसने फेंका है भला ये सम्मोहन जाल

लाल चूड़ियों से बजें भरे-भरे दो हाथ
दो पल में ही हो गया सात जनम का साथ

सात भाँवरों में अगर होती कोई बात
निष्ठा से रहते सदा तन मन दोनों साथ

काव्य जगत में जानामाना नाम। पेशे से पत्रकार कवयित्री सुमन सरीन ने कई पत्रिकाओं में संपादन सहयोगी के रूप में काम किया। आँचलिकता एवं नए-नए बिंब विधान उनकी रचनाओं को अलग पहचान देते थे। फिल्म एवं धारावाहिकों के लिए गीत-संवाद लेखन।

कविता

• सोहन शर्मा

खुशफहम

इस बस्ती की धरती है
गर्म जोशी की
लोग दोस्ताना हैं
आदाब करते हैं
और बातें
बहुत मीठी
चीजें परोसते मेजबान
पेश करते हैं
एक अच्छे दिन की उम्मीद
हो सकता है यह सब मशीनी हो
करीने से हिस्सा, शिष्टाचार का
फिर भी अच्छा है
खुशफहम
बस्ती के दफ्तरी हिस्से में
कोई चलता नहीं
उछलते हैं सभी
काम पर जाने के लिए
धक्कामुकी में
ठिठोली करते
सधे हैं
लोकल ट्रेन की निश्चित खिडकी पर
रामधुन या रमी के सहारे
एक दड़बे से निकल कर
दूसरे दड़बे में जाना
तय है
सप्ताह का हर दिन एक दड़बा है
इतवार को
दोस्त, सिनेमा, समुद्र तट
दड़बे में बदल जाते हैं
सबके सब
उपनगर खूबसूरत है
घर हैं उसमें
पर वे सब बंद हैं
यहाँ कोई नहीं जिसके साथ
चल सकें आप
बात कर सकें, पूछ सकें पता
चौराहा, चौपाल, स्टेशन
बस अड्डे का
कोई नहीं
जिसे सलाम तक कर सकें आप
अदल-बदल सकें
खयालात, खबरें, अफवाहें और लतीफे
हर कोई बंद है
दड़बे में
कोई जानकारी
इंतज़ार किसी का
फ़िज़ूल होगा
कुछ नहीं, छूना होगा
महज टी.वी. स्क्रीन
दबाना होगा बटन
या टनटनाना होगा टेलीफोन
हर वो जानकारी मिल जाएगी
चाहिए आपको जो भी
पहले से भरा टेप

बताएगा
दोस्त आपका
व्यस्त है या शहर से बाहर
विमान की उड़ान का समय
ट्रेन की रवानगी
संदेश टेप हो जाएगा
बात करने की आपकी चाहत
दबी रह जाएगी
यहाँ बतकही एक तरफा है
यहाँ दुकानें हैं
और सलाहकार आपके वास्ते
जो ज़रूरतें पैदा करते हैं आपकी
कमीशन पर
हर चीज़ हाज़िर है ख़िदमत में
कितने दिन
किस मुल्क या शहर में
मज़े लूट सकते हैं आप
किस कीमत पर
'सर्क्यूलर टूर' तीर्थ यात्रियों को
बड़ी मात्रा में
पुण्य मुहैया करवा सकता है
थोड़े बजट में
कैसे ले जा सकते हैं
बच्चों को हिल स्टेशन
ग्रुप फोटो कितना किफायती होता है

खर्च का पूरा हिसाब
तसल्ली बख्श
कंपनियाँ बनाती है चीज़ें
बदलती हैं फ़ैशन तेज़ी से
क़ीमतें बढ़ाने के
खाँचे सधे-बँधे हैं
सख़्त बेलोच
और आपको कोई
स्वतंत्रता नहीं
गो कि मुक्त समाज है।
स्वतंत्रता आपकी कटौती करती है
उनके मुनाफे
जो कमाते है आपके बूते पर
सो...
आपको होना पड़ता है काम का
गर नहीं हैं आप
खतरा पूरा है
चोट खाने का
दड़बे में बदल जाने का।
आप मुसाफ़िर की तरह चलें
मुनाफ़े और मशीन के बीच
चूहा-दौड़ में उलझी इस बस्ती में
बहुत कुछ है देखने को
मसलन...
बैलगाड़ियों की रफ्तार से पहुँचते
खत
बच्चों के बड़े होने की गति से
कहीं ज़्यादह तेज़ी के साथ
छोटी होती
दूध की बोतलें
आश्वस्त रहनुमा
कि हादसा नहीं होगा
सांख्यिकीय संभावना
इक्कीसवीं शती में।
ख़ुशफ़हमियों से घिरे दोस्त
कि बचा जा सकता है
हादसों से
अकेले अकेले

प्रसिद्ध मार्क्सवादी चिंतक, बैंक ऑफ़ बड़ौदा में उपमहाप्रबंधक पद से सेवानिवृत्त। इनकी कविता, कहानी, उपन्यास एवं समाजशास्त्र से जुड़ी लगभग १६ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। 'मीणाघाटी' एवं 'समरवंशी' इनके चर्चित उपन्यास हैं।

गीत

• श्रीनाथ द्विवेदी

लो निशा ढल गई

लो निशा ढल गई दीप भी बुझ गए
कल्पना को मधुर नींद आने लगी
उठ गया है पवन फूल की सेज से
यह थकी चाँदनी झिलमिलाने लगी

नीड़ की गोद से जग विहग उठ गए
वृक्ष की डाल पर वन्दना हो रही
पर हरी घास पर ओस की बूँद बन
जागरण की मधुरतम कथा सो रही
खुल रही है कमल की अलस पंखुरी
प्रात: की मृदु किरण मुस्कुराने लगी

जब क्षितिज की मलिन रेख पर मद भरी
साँझ की चितवनें थीं उतारी गई
सिन्धु का स्वच्छ दर्पण लिये हाथ में
उर्मियों से अलक जब सँवारी गई
तब मधुर तृप्ति की प्यास खोई हुई
प्राण की राह में डगमगाने लगी

रात बीती हुआ प्रात: का आगमन
मधुकरी पुष्प पर गुनगुनाने लगी
कण्ठ के स्वर प्रणय की सुधा पी चले
रागिनी वेदना को भुलाने लगी
पंख खोले चली गीत की यह तरी
हार में जीत का मधु मिलाने लगी

कवि, लेखक और 'भारत-भारती' संस्था के संस्थापक श्रीनाथ जी ने निराला पर विशेष लेखन किया था। 'महाप्राण सह्याद्री' 'देवयानी' और सारथीकृष्ण (महाकाव्य) उनकी प्रकाशित कृतियाँ हैं।

कविता

• श्रीनिधि द्विवेदी

स्व. डॉ. राजेंद्रप्रसाद के प्रति

कृषक राष्ट्र के कृषक राष्ट्रपति पहले पहले
जनता के साकार कर दिये स्वप्न सुनहले

राजाओं के इंद्र, आज के जनक, युधिष्ठिर
स्वतंत्रता के समरांगण में सदा रहे स्थिर

सत्ता के सर्वोच्च शिखर पर विनय विभूषण
सौम्य, अजातशत्रु, छाया छू सके न दूषण

रत्न देश के कहलाये बिहार के गाँधी
एक सूत्रता में स्वदेश की जनता बाँधी

काशी में पंडित-प्रवरों के पाँव पखारे
सोमनाथ में प्राण-प्रतिष्ठा हेतु पधारे

स्वतंत्रता, संस्कृति, स्वराज्य के थे उन्नायक
सीधे सादे धर्म-प्राण जनगण अधिनायक

श्री राजेंद्रप्रसाद! अमर इतिहास रहेगा
देश-जनों का करता हृदय विकास रहेगा

श्रीनिधि कवि और हिंदी प्रेमी थे। क्षमाशील और जीवटभरा व्यक्तित्व।'यौवन' उनकी प्रकाशित कृति है।

ग़ज़ल

• श्रीहरि

खोए रामोरसूल प्यारे हैं

ऐसे भक्तों की भीड़ आई है
सहमे - सहमे सभी नज़ारे हैं

ठिठकी-ठिठकी-सी सरयू की लहरें
ख़ौफ़ खाए हुए किनारे हैं

चादरें राम - नाम की ओढ़े
दोस्त खंजर लिए पधारे हैं

दोस्ती के दरख़्त मुरझाए
हाथ में मुल्ला जी के आरे हैं

उनकी आवाज में भरी तल्ख़ी
उनकी तक़रीर में शरारे हैं

इस तरफ़ हैं घृणा के व्यापारी
उस तरफ़ नफ़रतों के मारे हैं

हर तरफ़ आँधियों का आलम है
और गर्दिश में सब सितारे हैं

बाँटो काटो जला के राख करो
उठ रहे कैसे - कैसे नारे हैं!

भूल कर भी न लोग कहते हैं
तुम हमारे हो हम तुम्हारे हैं

कवि, प्राध्यापक, अध्यात्म जीवन के धनी श्रीहरि जी की आलोचना में कई पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं।

कविता

● हेमंत

ऐसा कुछ भी नहीं होगा

ऐसा कुछ भी नहीं होगा मेरे बाद
जो न था मेरे रहते
वही भोर की धुँधलके में लगेंगी डुबकियाँ
दोहराये जाएँगे मंत्र श्लोक
वही ऐन सिर पर धूप चढ़ जाने पर
बुझे चेहरे और चमकते कपड़ों में
भागेंगे लोग दफ़्तरों की ओर
वही द्वार पर चौक पूरे जाएँगे
और छौंकी जाएगी सोंधी दाल
वही काम से निपटकर
बतियाएंगी पड़ोसिनें सुख-दुख की बातें
वही दफ्तर से लौटती थकीं महिलाएँ
जूझेंगी आठ आने के लिए सब्ज़ीवाले से
वही शादी-ब्याह पढ़ाई-कर्ज़ और
बीमारी के तनाव से जूझेगा आम आदमी
वही घोटालों की भेंट चढ़ेगी राजनीति
सट्टा शेयर दलाली हेरा-फेरी में डूबा
रहेगा
ख़ास आदमी
गुनगुनाएँगी किशोरियाँ प्रेम के गीत
वेलेंटाइन डे के खास मौके पर
गुलाबों के साथ प्रेम का प्रस्ताव लिए
ढूँढेंगे किशोर मन का मीत
सब कुछ वैसा ही होगा...
जैसा अभी है मेरे रहते
हां तब यह अजूबा जरूर होगा
कि मेरी तस्वीर पर होगी चंदन की माला
और सामने अगरबत्ती
जो नहीं जली मेरे रहते

प्रसिद्ध कथाकार श्रीमती संतोष श्रीवास्तव के होनहार सुपुत्र। अल्पायु में ही निधन।
'मेरे रहते' कविता संग्रह प्रकाशित।

प्रत्येक विशेषांक की अपनी सीमाएँ होती हैं। संपादन मंडल एवं मित्रों के प्रयास से जिन दिवंगत काव्य सेवियों की रचनाएँ हमें प्राप्त हो पाईं वे यहाँ मौजूद हैं किंतु इन विभूतियों की रचनाओं से हम वंचित रहे। इनकी साहित्य सेवाओं के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए यहाँ उनका उल्लेख कर रहे हैं–

बाबा बनारसी
पं. इंद्र
दाऊदयाल
गोपालदत्त शर्मा
कपिल पाण्डे
कीर्ति परदेशी
मदन मोहन व्यास
निर्मल
नरोत्तम व्यास
पंकज
पन्नालाल नाग
कु. राधा शर्मा
रघुपति सिंह रमन
रमाकांत आजाद
राग कानपुरी
राममूर्ति चतुर्वेदी
राज शाहजहाँ पुरी
सतीश वर्मा
श्यामसुंदर गुप्ता
शील अम्बालवी
सूर्यदेव उपाध्याय
सुधाकर दीक्षित
श्रीधर मिश्र
सनम गोरखपुरी
उदय खन्ना

पुस्तकें मिलीं

लम्हों का दरिया

(३६३६ अशआरों की लम्बी ग़ज़ल)

श्री सुमन अग्रवाल ख़ूबसूरत लबो-लहज़े के कुहना मश्क़ शायर हैं। पिछले लगभग तीन-चार बरसों में निहायत सब्रो-तहम्मुल का सुबूत देते हुए उन्होंने साढ़े तीन हज़ार शेरों पर मुश्तमिल एक लम्बी ग़ज़ल कहने की क़ामयाब कोशिश की है। मेरी मालूमात के मुताबिक़ यह विश्व की अब तक की सबसे लम्बी ग़ज़ल है। उनकी इस जसारत की जितनी भी तारीफ़ की जाए, कम ही होगी।

इस ग़ज़ल में ज़िंदगी की वाक़यात, सामाजिक सच्चाइयाँ और तज्रबे, उनके एहसास और जज़्बात से हम आहंग होकर इज़्हार की ताज़गी का कुछ इस अंदाज़ से सुबूत देते हुए लगते हैं कि जैसे उन्होंने ज़िंदगी के तानों-बानों से उलझते-सुलझते हुए अपनी एक-एक साँस का हिसाब चुकता कर दिया है। क्योंकि हमारी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में उजागर होने वाले हालात की आईनादारी करती हुई इस ग़ज़ल में दिल की मामलेदारियों के रंग भी उभरते हैं तो वहीं ग़मेज़माना के बयान भी हर ख़ासोआम को अपने ही अफसाने महसूस होने लगते हैं। उन्होंने इन्सानी नफ़्सयात और उसकी पेचीदगियों को प्रतीकों और संकेतों की बजाएं आम बोलचाल की ज़बान में ही अभिव्यक्त किया है।

सुमन जी की इस ग़ज़ल में एक ख़ास बात जो देखने को मिली वो यह कि महरूमियों और नाकामियों की ज़िंदगी की रंगारंगियों को भी फ़न की ख़ूबी के साथ बयान किया है। इसी के साथ इस ग़ज़ल के शेरों में पाया कि उनके यहाँ ज़िंदगी की चाह, हौसला और ज़िंदगी की आरज़ुएँ भी मचलती दिखाई देती हैं कि इनमें सिर्फ़ ज़िंदगी की अफ्सुर्दा नग्में ही नहीं हैं बल्कि ज़िदगी की खुशहाली और ख़ूबसूरती के तराने भी गूँजते हैं। यानी सुमन जी ने ज़िंदगी के पुरकैफ़ लम्हों का रस भी निचोड़ा है तो दूसरी तरफ गिरते हुए सामाजिक मूल्य, राष्ट्रीय चरित्र का ह्रास और बिखरती हुई ज़िंदगी के ग़मगीन क़िस्से भी बड़ी चाबुकदस्ती से रकम किये हैं।

मैं बहुत ही ग़ैरजानिबदारी से कहना चाहता हूँ कि यह नायाब किताब 'लम्हों का दरिया' ग़ज़ल के सिलसिले में एक ऐतिहासिक घटना साबित होगी जो इस राह पर चलने वालों की कई वर्षों तक रहनुमाई करेगी।

- अनवारे इस्लाम
(संपादक सुखनवर)

संभाल कर रखना

राजेंद्र तिवारी का हाल ही में प्रकाशित ग़ज़ल संग्रह एक सुखद अनुभूति लेकर आया है। संग्रह में ग़ज़ल के व्याकरण के प्रति पूरी सावधानी बरती गयी है साथ ही ग़ज़ल के अनूठे लहजे को या उसकी आत्मा को बरकरार रखा गया है। कड़वी से कड़वी सच्चाई को ग़ज़ल के कलात्मक लहजे में ही बयान किया गया है–

ये मान लूँ मैं चमन में बहार आयी है...
कोई तो फूल किसी शाख पर दिखाई दे।

यह ग़ज़ल संग्रह एक खूबसूरत पुल बनाता हैं हिंदी और उर्दू ग़ज़ल के बीच, रिवायती शायरी और जदीद (आधुनिक) शायरी के बीच। पाठकों की दृष्टि से देखें तो हर ग़ज़ल में ऐसे उद्धरणीय शेर मिलते हैं जो उन्हें बेहतर ज़िंदगी का मशविरा दें, संघर्ष की प्रेरणा दें –

ख्वाहिशों के जंगल में दूर तक नहीं जाना....
ख्वाहिशों के जंगल से वापसी नहीं होती।

संग्रह में एक बेहतर मनुष्य, बेहतर समाज, बेहतर दुनिया का सपना झाँकता है।

संग्रह में अनेक मुश्किल और अनूठे रदीफ़ों को बड़ी कुशलता से निभाया गया है। जैसे – 'शाम से गाने लगता है, 'लूट ले गया कोई', 'ढूँढ़ता है क्या', ' चक्कर में', 'चाट जाता है', 'के लिए सोचता है कौन' आदि अनेक उदाहरण हैं। नयी उपमाओं , नए बिम्बों, नए क़ाफ़िया रदीफ़ों और नयी कहन से सजा-धजा तथा 'प्रेम' की भरपूर उपस्थिति से संपन्न यह संग्रह ग़ज़ल संग्रहों की भीड़ में एक अलग छाप तो छोड़ता ही है, हिंदी ग़ज़ल को भी समृद्ध करता है।

- लक्ष्मीशंकर बाजपेयी
नई दिल्ली

काव्या परिवार

हस्तीमल 'हस्ती' - काव्या के संस्थापक संपादक। हस्तीजी समकालीन हिंदी ग़ज़ल के महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं। महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी के संत नामदेव पुरस्कार के सम्मानित हस्तीजी के तीन संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। 'क्या कहें किससे कहें, 'कुछ और तरह से भी' तथा 'ना बादल ना दरिया जाने', 'मेरे चंद अशआर' इनके ग़ज़ल संग्रह हैं। हाल ही में महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी का राज्य स्तरीय साने गुरुजी एकता पुरस्कर मिला है। ।

लक्ष्मण दुबे - हिंदी, सिंधी, गुजराती तथा अंग्रेज़ी पर एक समान प्रभुत्व रखनेवाले लक्ष्मण दुबे अपनी सिंधी रचनाओं के लिए साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत हो चुके हैं। इन्हें केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा भी सम्मानित किया जा चुका है। महत्त्वपूर्ण रचनाएँ - कोई घर में ढूँढ़े घर, जो किनारा था कभी(ग़ज़ल संग्रह) मधु के दीप-अमीर खुसरो (सहस्राब्दी पुस्तक) बेनाम चिट्ठियाँ (ग़ज़ल संग्रह) अक्षर अक्षर (दोहा संग्रह)।

हूबनाथ - विद्यार्थियों में लोकप्रिय अध्यापक, कवि और समाजकर्मी हूबनाथजी पेशे से मुंबई विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में रीडर हैं। 'कौए' (महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी पुरस्कार) 'लोअर परेल' 'मिट्टी' (काव्य संग्रह), सिनेमा साहित्य और समाज, ललित निबंध: विधा की बात, ललित निबंधकार कुबेरनाथ राय, कथा-पटकथा-संवाद आदि पुस्तकें प्रकाशित।

शत्रुघ्न प्रसाद - पेशे से पत्रकार-लेखक श्री शत्रुघ्न प्रसाद जी काफी अरसों तक 'दोपहर का सामना' से जुड़े थे। फिलहाल मुंबई शहर की कई पत्रिकाओं तथा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में कार्यरत हैं। धारावाहिक लेखन भी किया।

कविता गुप्ता - कवयित्री एवं संस्कृतिकर्मी कविताजी का काव्य संग्रह 'यूँ ही नहीं रोती माँ' बेहद चर्चित रहा। साहित्यिक गतिविधियों में विशेष रुचि।

डॉ. जगन्नाथ प्रसाद बघेल - महानगर निगम लिमिटेड, मुंबई में उपमहाप्रबंधक डॉ. बघेल मूलत: कवि हैं। 'स्वप्न और समय' 'घुटने की पीर' 'अजपथ के कीर्तिपुरुष' 'ब्रज के लोक देवता' 'युग शतपदी' तथा 'ब्रजमंडल में' इनकी प्रकाशित कृतियाँ हैं।

डॉ. नंदलाल पाठक - प्राध्यापक एवं कवि डॉ. नंदलाल पाठक की कई कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। मुंबई शहर के लोकप्रिय गीतकार एवं शब्दम् सांस्कृतिक संस्था के संस्थापक डॉ. पाठक काव्या के सम्माननीय सलाहकार हैं।

अशोक बिंदल - कवि हृदय श्री अशोक बिंदल जी मुंबई की प्रख्यात सांस्कृतिक गतिविधि 'चौपाल' के प्रमुख आधार स्तंभ हैं। मराठी से हिंदी अनुवाद में सिद्धहस्त बिंदल जी काव्या के परामर्शदाता हैं। डॉ. भवान महाजन की कृति 'अंतस के परिजन' का मराठी से अनुवाद।

राधामण त्रिपाठी - पेशे से पत्रकार तथा साहित्य समाज एवं पत्रकारिता के अंत:संबंधों पर कुशल चिंतक विजय फिलहाल मुद्रित पत्रकारिता को इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से प्रस्तुत करने में जुटे हुए हैं। नवनीत में वरिष्ठ उपसंपादक के पद पर कार्यरत।

अमित - साहित्य और भूमंडलीकरण के परस्पर संबंधों पर शोधकार्यरत श्री अमित मुंबई विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में पीएच.डी. कर रहे हैं।

नये संग्रह

ख़ूबसूरत है आज भी दुनिया (ग़ज़ल संग्रह)
माधव कौशिक
प्रकाशक - भारतीय ज्ञानपीठ
१८, इंस्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली-०३ कीमत- ११० रूपये

आख़िरकार (काव्य संग्रह)
भगवान थावरानी
प्रकाशक **- नवसर्जन पब्लिकेशन**
गुजरात चेम्बर ऑफ कामर्स कम्पाउंड, आश्रम रोड, अहमदाबाद
कीमत-१५० रूपये

लफ़्ज़ों की कश्ती (ग़ज़ल संग्रह)
डॉ. अजय डींगरा
प्रकाशक **- हिंदी साहित्य सदन**
२ बी.डी. चेम्बर्स, १०/५४ देशबंधु गुप्ता रोड, करोल बाग, नई दिल्ली- ०५
कीमत -१५० रूपए

कैनवास पर शब्द (कविता संग्रह)
संदीप राशिनकर
प्रकाशक **- अंसारी पब्लिकेशन**
प्रसार कुंज, सेक्टर- पाई
ग्रेटर नोएडा कीमत- २५० रूपये

परित्यक्ता (खण्ड काव्य)
हरिलाल मिलन
प्रकाशक **- आशीष प्रकाशन**
कानपुर, उ.प्र.
कीमत - २५० रुपए

सारथी हूँ मैं (ग़ज़ल संग्रह)
किशन तिवारी
प्रकाशक **- पहले-पहल प्रकाशन**
भोपाल, म.प्र.
कीमत - १५० रूपए

छलक गई दो बूँद (दोहा संग्रह)
धनीराम बादल
प्रकाशक **- सुर्खाब पब्लिकेशन उज्ज़ैन,**
कीमत - १५० रुपए

समकालीन हिंदी ग़ज़ल संकलन
संपादन - माधव कौशिक
प्रकाशक **- अंसारी पब्लिकेशन**
प्रसार कुंज, सेक्टर- पाई
ग्रेटर नोएडा कीमत- २५० रूपये

और अंत में

अगली सूचना मिलने तक कृपया रचनाएँ एवं शुल्क न भेजें ।

ले मशालें चल पड़े हैं लोग हिंदुस्तान के
अब अँधेरा जीत लेंगे लोग हिंदुस्तान के

कह रही है झोपड़ी और पूछते हैं खेत भी
कब तलक लुटते रहेंगे लोग हिंदुस्तान के

बिन लड़े कुछ भी नहीं मिलता यहाँ ये जानकर
अब लड़ाई लड़ रहे हैं लोग हिंदुस्तान के

चीखती है हर रुकावट ठोकरों की मार से
बेड़िया खनका रहे हैं लोग हिंदुस्तान के

लाल सूरज अब उगेगा देश के हर गाँव में
अब इकट्ठे हो रहे हैं लोग हिंदुस्तान के

कफ़न बाँधे हैं सिरों पर हाथ में तलवार है
ढूँढ़ने निकले हैं दुश्मन लोग हिंदुस्तान के

दे रहे हैं देख लो अब वो सदा-ए-इंक़लाब
हाथ में परचम लिए हैं लोग हिंदुस्तान के

एकता से बल मिला है झोपडी की साँस को
आँधियों से लड़ रहे हैं लोग हिंदुस्तान के

जो सुबह फीकी दिखे है आजकल
लाल रंग उसमें भरेंगे लोग हिंदुस्तान के

ले मशालें चल पड़े हैं लोग हिंदुस्तान के
अब अँधेरा जीत लेंगे लोग हिंदुस्तान के

- शैलेंद्र

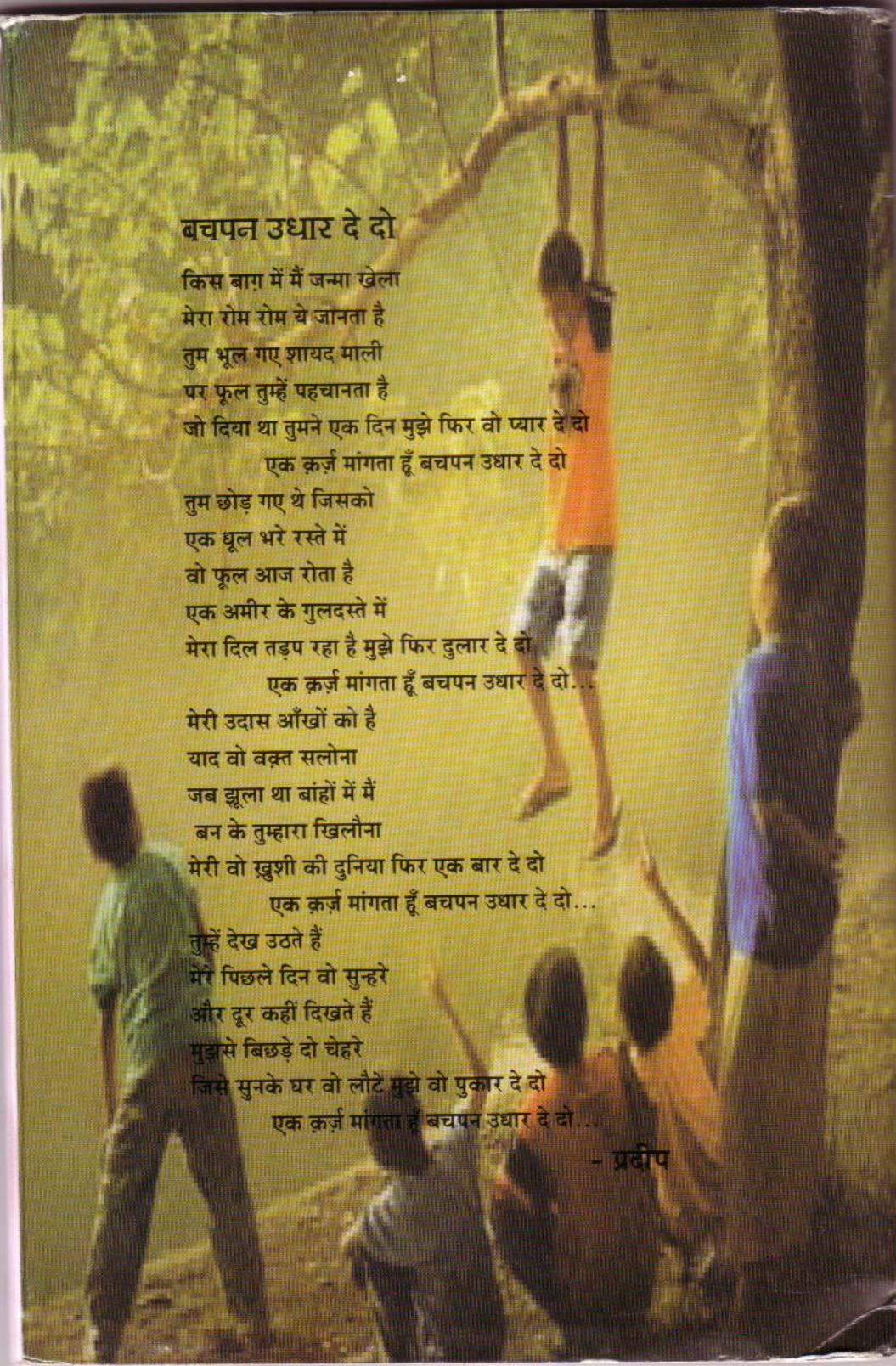

बचपन उधार दे दो

किस बाग़ में मैं जन्मा खेला
मेरा रोम रोम ये जानता है
तुम भूल गए शायद माली
पर फूल तुम्हें पहचानता है
जो दिया था तुमने एक दिन मुझे फिर वो प्यार दे दो
एक क़र्ज़ मांगता हूँ बचपन उधार दे दो

तुम छोड़ गए थे जिसको
एक धूल भरे रस्ते में
वो फूल आज रोता है
एक अमीर के गुलदस्ते में
मेरा दिल तड़प रहा है मुझे फिर दुलार दे दो
एक क़र्ज़ मांगता हूँ बचपन उधार दे दो...

मेरी उदास आँखों को है
याद वो वक़्त सलोना
जब झूला था बांहों में मैं
बन के तुम्हारा खिलौना
मेरी वो ख़ुशी की दुनिया फिर एक बार दे दो
एक क़र्ज़ मांगता हूँ बचपन उधार दे दो...

तुम्हें देख उठते हैं
मेरे पिछले दिन वो सुन्हरे
और दूर कहीं दिखते हैं
मुझसे बिछड़े दो चेहरे
जिसे सुनके घर वो लौटे मुझे वो पुकार दे दो
एक क़र्ज़ मांगता हूँ बचपन उधार दे दो...

- प्रदीप